माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

पाठयक्रम, पाठ्यपुस्तक एवं मॉडल प्रश्न पत्र में आंशिक संशोधन का विवरण

सत्र 2017–2018 हेतु पाठयक्रम, पाठ्यपुस्तक एवं मॉडल प्रश्न पत्र में संशोधित विवरण निम्नानुसार है। अतः समस्त शिक्षक एवं विद्यार्थी इसी अनुरूप शिक्षण अध्ययन कार्य करें।

1. पाठ्यक्रम में संशोधन :–

A. कक्षा–10 संस्कृत (तृतीय भाषा) के पाठ्यक्रम में क्रम संख्या–1 पठितावबोधनम के बिन्दु (v) में संस्कृतमाध्यमेन अष्टसु पञ्चप्रश्नानाम् के स्थान पर 'षट्प्रश्नानाम्' पढा जाये।

B. पुस्तक में अपठितावबोधनाम अभ्यासार्थ दिये गये हैं। इनके अतिरिक्त अन्य अपठितावबोधनाम् से भी परीक्षा में प्रश्न पूछे जा सकेंगे।

C. वरिष्ठ उपाध्याय परीक्षा के विषय ज्योतिषशास्त्रम् के 'बीजगणितम्' (प्रारम्भतः एकवर्ण समीकरणान्तं यावत भागः) से कोष्ठक में लिखित शब्दों को विलोपित करते हुए केवल 'बीजगणितम्' पढ़ा जाये।

D. कक्षा–12 की विवरणिका में पृष्ठ 73 पर कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी और प्रोग्रामिंग–II के स्थान पर सूचना प्रौद्योगिकी और प्रोग्रामिंग II पढ़ा जायें।

2. पाठ्यपुस्तक में संशोधन :–

A. कक्षा 12 की गृह विज्ञान पुस्तक में इकाई –V सम्बंधित अध्याय 'गृह विज्ञान–पारिवारिक एवं व्यावसायिक शिक्षा' मुद्रण से रह गया है। इस अध्याय की पूरक सामग्री वेबसाइट पर अपलोड कर दी गई है। अतः समस्त शिक्षक/विद्यार्थी इस सामग्री को डाउनलोड कर अध्यापन/अध्ययन करें। इस पूरक सामग्री में से विवरणिका एवं मॉडल प्रश्नपत्रानुसार परीक्षा में प्रश्न पूछे जायेंगे।

3. मॉडल प्रश्न पत्र में संशोधन :–

1. कक्षा –XII – इतिहास	ब्ल्यू प्रिंट में आंशिक संशोधन
2. कक्षा – XII – चित्रकला	ब्ल्यू प्रिंट में आंशिक संशोधन
3. कक्षा – XII – व्यवसाय अध्ययन	ब्ल्यू प्रिंट में आंशिक संशोधन
4. कक्षा – XII – अंग्रेजी (अनिवार्य)	प्रश्न पत्र का प्रारूप एवं ब्ल्यू प्रिंट में आंशिक संशोधन
5. कक्षा– XII –सूचना प्रौद्योगिकी एवं प्रोग्रामिंग-II	–मॉडल प्रश्नपत्र में खण्ड अ,ब, एवं स ही होंगे, जिनमें कुल 30 प्रश्न होंगे। खण्ड 'द' शब्द को विलोपित किया जाता है।
6. कक्षा – XII –गृह विज्ञान –	मॉडल प्रश्नपत्र में परीक्षार्थियों के सामान्य निर्देश के बिन्दु 6 में खण्ड द शब्द को विलोपित किया जाता हैं। प्रश्न संख्या 28–30 तक खण्ड स में ही शामिल होंगे।
7. कक्षा –X – संस्कृत (तृतीय भाषा)	मॉडल प्रश्न पत्र के प्रश्न संख्या 27 में अष्ठ वाक्यानि के स्थान पर षट् वाक्यानि पढा जाये।

इकाई– V

गृह विज्ञान – पारिवारिक एवं व्यावसायिक शिक्षा

गृह विज्ञान एक व्यवहारिक विज्ञान का विषय है। इसमें विज्ञान व कला के विभिन्न विषयों का ज्ञान सम्मिलित है। यह विषय पारिवारिक जीवन को सफल एवं समृद्धिशाली बनाने में विशेष योगदान देता है। इस विषय के द्वारा पारिवारिक जीवन के विभिन्न क्रिया–कलापों के सम्पादन में कलात्मक दृष्टिकोण के साथ–साथ वैज्ञानिक आधार को भी प्राथमिकता दी जाती है।

घर वह स्थान है जहाँ पर परिवार के सभी सदस्यों की विभिन्न शारीरिक, मानसिक, भौतिक, आर्थिक एवं आध्यात्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति जीवन पर्यन्त होती रहती है। यही वह जगह है जहाँ परिवार में विभिन्न मूल्यों का न केवल जन्म वरन् उनका विकास भी होता है। एक अच्छा घर धरती पर स्वर्ग के समान होता है क्योंकि अच्छे घर में ही व्यक्ति का सर्वांगीण विकास होता है तथा परिवार के जीवन स्तर में भी गुणवत्ता आती है। यह सब घर के वातावरण पर निर्भर करता है।

गृह विज्ञान शिक्षा का ज्ञान व उसका उपयोग इसमें अहम भूमिका निभाता है।

गृह विज्ञान विषय के पाँचों ही विभाग – खाद्य एवं पोषण, मानव विकास एवं पारिवारिक सम्बन्ध, पारिवारिक संसाधन प्रबन्धन, वस्त्र एवं परिधान तथा गृह विज्ञान प्रसार शिक्षा पारिवारिक जीवन को सफल बनाने के लिए उत्प्रेरित करते हैं। उदाहरणार्थ सन्तुलित आहार के ज्ञान द्वारा परिवार के सभी सदस्यों को उनकी आवश्यकताओं के अनुसार पौष्टिक तत्त्व प्राप्त होते हैं और उनका स्वास्थ्य अच्छा रहता है। फलस्वरूप वे घर तथा व्यावसायिक क्षेत्र में अपनी जिम्मेदारियों को प्रभावी ढंग से सम्पन्न कर पाते हैं। भोजन के पश्चात् व्यक्ति की आधार भूत आवश्यकताओं में वस्त्र व मकान आते हैं। वस्त्रों के निर्माण से लेकर, चयन, खरीददारी, कटाई, सिलाई, धुलाई, रंगाई, छपाई एवं रखरखाव की जानकारी द्वारा गृहिणी अपने परिवारजनों के लिये उत्तम वस्त्रों का चुनाव अपनी आर्थिक स्थिति के अनुरूप कर अधिकतम् सन्तोष प्राप्त कर सकती है।

मकान परिवार की तीसरी मूलभूत आवश्यकता है। गृह विज्ञान शिक्षा में मकान निर्माण के लिए भूमि का चुनाव, कमरों का व्यवस्थापन, निर्माण, रखरखाव एवं उसकी आन्तरिक व बाह्य साज–सज्जा की विस्तृत जानकारी एक गृहिणी को सुखद भवन निर्माण हेतु सहायता प्रदान करती है। गृह विज्ञान शिक्षा परिवार में सीमित साधनों का विवेक पूर्वक उपयोग कर अधिकतम् संतोष प्राप्त करने में गृहलक्ष्मी को सक्षम बनाती है। एक परिवार विभिन्न सदस्यों जैसे माता–पिता, पति–पत्नी, भाई–बहन एवं बच्चों का एक समूह है। इन सभी के व्यक्तिगत एवं सामूहिक विकास तथा अन्तर्सम्बन्धों में परस्पर सामंजस्य के लिये मानव विकास एवं पारिवारिक सम्बन्ध विभाग ज्ञान प्रदान कर एक सुखी परिवार की स्थापना में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। गृह विज्ञान प्रसार शिक्षा विभाग छात्र–छात्राओं को अर्जित ज्ञान का प्रकाश परिवार जनों में फैलाने तथा सामाजिक उत्थान हेतु इसका उपयोग करने के बारे में जानकारी देता है जिससे एक अच्छे परिवार का निर्माण होता है जो कि एक अच्छे राष्ट्र के निर्माण में सहायक है। पारिवारिक शिक्षा के साथ–साथ गृह विज्ञान शिक्षा की व्यावसायिक उपयोगिता भी है, यानि कि गृह विज्ञान शिक्षा सिर्फ घर तक ही सीमित न रहकर व्यावसायिक क्षेत्र में भी दिन–प्रतिदिन प्रगतिशील होती जा रही है।

आज का युग विज्ञान एवं तकनीकी के सर्वोच्च शिखर पर पहुँच चुका है। औद्योगिकीकरण का विस्तार, शहरीकरण, जनसंख्या विस्फोट, महिला शिक्षा आदि कई ऐसे कारक हैं जिनकी वजह से पारिवारिक स्थितियों में बहुत परिवर्तन आया है। पहले गृहिणियाँ सिर्फ घरेलू जिम्मेदारियों तक ही सीमित थीं लेकिन अब वे घर के कामों के साथ–साथ रोज़गार हेतु घर से बाहर विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत हैं। यही कारण है कि गृह विज्ञान शिक्षा के पाठ्यक्रम में समय–समय पर परिवर्तित कर, ज़रूरतों को ध्यान में रखकर आज के परिपेक्ष्य में तैयार किया जाता है। अब जितना महत्त्व गृह विज्ञान शिक्षा का घरेलू स्तर पर है उतना ही महत्त्व व्यावसायिक स्तर पर भी है। अब गृह विज्ञान शिक्षा परिवार की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने में भी सहायक है।

गृह विज्ञान शिक्षा के कक्षा 11 व 12 के पाठ्यक्रम द्वारा आपने विभिन्न अध्यायों के अन्तर्गत सैद्धान्तिक ज्ञान एवं प्रयोगिक अनुभव अर्जित किया है। निम्न सारिणी में कुछ ऐसे विषय अंकित किये गये हैं जिनमें कौशल अर्जित कर आप स्वरोज़गार प्राप्त कर सकते हैं।

क्र.सं.गृह विज्ञान विभाग	**विषय**
1. खाद्य एवं पोषण	खाद्य परिरक्षण – पापड़, बड़ी, अचार, जैम, जैली, शरबत, मुरब्बा, चटनी, सॉस अदि तैयार करना।

2. मानव विकास एवं एवं पारिवारिक सम्बन्ध	पालना गृह एवं नर्सरी स्कूल खोलना। बच्चों के लिये खिलौने तैयार करना, नये–नये खेल विकसित करना।
3. पारिवारिक संसाधन प्रबन्धन	आंतरिक सज्जा, पुष्प सज्जा, फर्श की सजावट, सजावटी वस्तुओं का निर्माण, विभिन्न धातुओं एवं पदार्थों की सफाई करना आदि।
4. वस्त्र एवं परिधान	सिलाई, बुनाई, छपाई, रंगाई करना, बन्धेज व बाटिक बनाना।

सारिणी में दिये गये विषयों पर स्वरोजगार प्राप्त करने के अलावा भी कई अन्य ऐसे विषय हैं जो गृह विज्ञान शिक्षा से सम्बन्धित हैं और छात्र उनमें अपनी रुचि के अनुसार विशेष पाठ्यक्रम की सहायता से व्यावसायिक कौशल अर्जित कर स्वरोज़गार प्रारम्भ कर सकते हैं।

गृह विज्ञान शिक्षा से सम्बन्धित स्वरोज़गार के लिये चल रहे कुछ विशेष पाठ्यक्रम एवं संस्थाएँ जो हमारे राज्य में चल रहीं हैं, के बारे में जानकारी प्राप्त करने से पहले उचित होगा कि हम यह समझ लें कि स्वरोज़गार क्या है?इसका आज के परिपेक्ष्य में क्या महत्त्व है, तथा इससे हमें क्या लाभ हो सकते हैं?

जैसा कि **''स्वरोज़गार''** से यह स्पष्ट होता है कि व्यक्ति किसी विषय में ज्ञान अर्जित कर स्वयं रोज़गार शुरू करे ताकि उसे अपने जीविकोपार्जन हेतु किसी और के संस्थान में कार्यरत होने के बजाय स्वयं के आर्थिक संस्थान की स्थापना कर जीविका कमा सके। प्रायः आपने देखा होगा कि व्यक्ति अपनी शिक्षा पूरी करने के पश्चात् या तो किसी सरकारी, गैर–सरकारी संस्था में नौकरी के माध्यम से कार्य कर नियमित मज़दूरी या वेतन प्राप्त करता है या किसी औद्योगिक संस्थान में नौकरी कर वेतन या लाभांश प्राप्त करता है जिससे वह अपनी व परिवार के सभी सदस्यों की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है।

वर्तमान में उपरोक्त स्थिति में काफी परिवर्तन आया है। आपने कई लोगों से यह सुना होगा कि ''आजकल नौकरियाँ कहाँ मिलती हैं?'' अच्छे–अच्छे, पढ़े–लिखे व्यक्ति जिनके पास ऊँची–ऊँची उपाधियाँ हैं, पर उन्हें उनकी क्षमता अनुसार संस्थानों में नौकरियाँ उपलब्ध नहीं हैं। यदि उपलब्ध हो भी जाती हैं तो वे उनकी कुशलता के योग्य नहीं तथा बहुत कम वेतन पर उपलब्ध होती हैं। फलस्वरूप नवयुवक तथा युवतियों में असंतोष, मानसिक तनाव एवं कुंठा बढ़ती जा रही है। ऐसे में व्यक्ति करे तो क्या करे?इसके निवारण हेतु स्वरोज़गार एक महत्त्वपूर्ण सुझाव है। दिये गये उदाहरण से आप स्वरोज़गार के महत्त्व को भली भाँति समझ सकते हैं।

आपने गृह विज्ञान शिक्षा में कक्षा 11 व 12 के पाठ्यक्रम के कुछ अध्यायों में कपड़े सिलने के बारे में सीखा। आपको कपड़े सिलने में रुचि भी है तथा आपमें सिलाई का कौशल भी है। आप कक्षा 12 उत्तीर्ण करने के पश्चात् इस क्षेत्र में प्रशिक्षण प्राप्त कर सिलाई द्वारा घर पर एक व्यवसाय प्रारम्भ कर सकती हैं। आप विभिन्न प्रकार के परिधान बना, उन्हें विक्रय कर अपने परिवार को आर्थिक सहयोग प्रदान कर सकती हैं। यही **''स्वरोज़गार''** है।

किसी भी क्षेत्र में कौशल अर्जित कर आप दो तरीकों से व्यवसाय कर सकते हैं। एक तो आप उत्पाद तैयार कर किसी प्रतिष्ठित व्यापारी को दे सकते हैं ताकि वह आपके द्वारा बनाये गये उत्पाद को बाजार में विक्रय करे। दूसरा आपके द्वारा निर्मित विभिन्न उत्पादों का विक्रय आप स्वयं करें। पहली स्थिति में व्यापारी आपसे उत्पाद कम कीमत पर लेकर ग्राहक को अधिक दाम पर बेचेगा ताकि उसे अधिकतम् लाभांश प्राप्त हो जबकि दूसरी स्थिति में यदि आप स्वयं अपने द्वारा निर्मित उत्पाद बेचेंगी तो आपको अधिक लाभ होगा तथा मानसिक संतोष भी मिलेगा। इस प्रकार आप स्वरोज़गार के माध्यम से अपने परिवार की मौद्रिक आय तथा मानसिक आय दोनों में ही वृद्धि कर सकते हैं।

स्वरोज़गार स्थापित करने के कई लाभ हैं :

- लघु स्वरोजगार स्थापित करने हेतु कम पूँजी की आवश्यकता होती है अतः प्रत्येक व्यक्ति जिसमें किसी भी काम को करने का कौशल है अपना व्यवसाय करने हेतु साहस जुटा सकता है।
- बेरोज़गारी हमारे देश की एक ज्वलन्त समस्या है। स्वरोज़गार से रोजगार के अवसरों में वृद्धि होती है तथा बेरोजगारी की समस्या का निराकरण होता है।
- परिवार के सदस्यों एवं मित्रों की सहायता से स्वरोजगार आसानी से स्थापित किया जा सकता है। अतः रोजगार हेतु

विस्फोटक स्थिति नहीं आती।

- स्वयं के कार्य करने के तौर–तरीके, तकनीक आदि दूसरे लोगों तक आसानी से नहीं पहुँचती है और रोज़गार का भेद भी आसानी से नहीं खुलता।
- स्वरोजगार का संचालन करना अत्यन्त सरल होता है, इसके लिये किसी विशिष्ट ज्ञान एवं प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं होती।
- स्वरोज़गार की राष्ट्रीय तथा प्रति व्यक्ति आय वृद्धि में एक अहम् भूमिका है।
- किसी भी लघु एवं घरेलू व्यावसायिक इकाई की स्थापना के तुरन्त बाद ही उत्पादन तथा लाभ प्राप्त होना शुरू हो जाता है।
- स्वरोज़गार द्वारा छोटे–छोटे उद्योग गाँवों में भी लगाये जा सकते हैं क्योंकि बड़े उ़द्योग बड़े शहरों तक ही सीमित होते हैं।
- मानवीय मूल्यों की दृष्टि से भी स्वरोज़गार अति उत्तम है। इसमें व्यक्ति को मशीन की तरह काम करने की आवश्यकता नहीं होती है।
- स्वरोज़गार द्वारा वस्तुओं का निर्यात भी बढ़ता है।
- स्वरोज़गार लघु स्तर पर होता है अतः उद्यमी को कई व्यापार चक्रों से मुक्ति मिलती है।
- स्वरोज़गार हेतु सरकार कई प्रशिक्षण एवं वित्तीय सहायता का लाभ उद्यमियों को देती है।

उपरोक्त सभी लाभों के कारण आज हमारे देश में स्वरोजगार के कई अवसर उपलब्ध हैं। आप भी इन सभी का लाभ प्राप्त कर अपना स्वरोजगार सफलतापूर्वक स्थापित कर सकते हैं। यह आप इस पुस्तक में पढ़ चुके हैं कि परिवार सभी आर्थिक क्रियाओं की मूल इकाई है अतः यह पारिवारिक शिक्षा **''गृह विज्ञान''**, स्वरोजगार हेतु एक उत्तम विषय है। अब आप रोजगार प्राप्त करने के साथ ही कई अन्य आशार्थियों को भी रोज़गार उपलब्ध करवा सकते हैं।

महत्त्वपूर्ण बिन्दु :

1. गृह विज्ञान शिक्षा एक व्यावहारिक शिक्षा का विषय है।
2. इसमें विज्ञान एवं कला के विभिन्न विषयों का ज्ञान सम्मिलित है।
3. गृह विज्ञान शिक्षा के पाँचों ही विभाग–खाद्य एवं पोषण, मानव विकास एवं पारिवारिक सम्बन्ध, पारिवारिक संसाधन प्रबन्धन, वस्त्र एवं परिधान तथा गृह विज्ञान प्रसार शिक्षा पारिवारिक जीवन को सफल बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
4. समाज के परिपेक्ष्य में गृह विज्ञान शिक्षा सिर्फ घर तक ही सीमित न रहकर व्यावसायिक क्षेत्र में भी दिन–प्रतिदिन प्रगतिशील होती जा रही है।
5. दैनिक जीवन की विभिन्न क्रिया–कलापों को सुचारु रूप से चलाने के साथ अब गृह विज्ञान शिक्षा स्वरोजगार के माध्यम से परिवार की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने में भी सहायक है।
6. किसी भी विषय में व्यावसायिक कौशल अर्जित कर स्वयं का औद्योगिक संस्थान स्थापित करना ही ''स्वरोजगार'' है।
7. भारतवर्ष में बेरोज़गारी की समस्या से निवारण हेतु स्वरोजगार एक उत्तम साधन है।
8. स्वरोज़गार स्थापित करने के कई लाभ हैं, जिनमें कम पूँजी की लागत, व्यापार चक्रों से मुक्ति, परिवार जनों का सहयोग, मानवीय मूल्यों में वृद्धि, सरल संचालन इत्यादि प्रमुख हैं।
9. सरकार स्वरोज़गार स्थापित करने हेतु प्रशिक्षण एवं वित्तीय सहायता का लाभ उद्यमियों को देती है।

अभ्यासार्थ प्रश्न :

1. निम्न प्रश्नों के सही उत्तर चुनें :

(i) गृह विज्ञान विषय में कितने विभाग हैं :

(अ) चार (ब) तीन

(स) पाँच (द) छः

(ii) निम्न में से कौनसा विषय भूमि चुनाव में सहायता करता है :

(अ) खाद्य एवं पोषण (ब) मानव विकास एवं पारिवारिक अध्ययन

(स) वस्त्र एवं परिधान (द) पारिवारिक संसाधन प्रबंधन

(iii) वस्त्र एवं परिधान में निम्न विषय नहीं आते हैं :

(अ) सिलाई (ब) बुनाई

(स) बन्धेज (द) नर्सरी स्कूल खोलना

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये :

(i) गृह विज्ञान शिक्षा के द्वारा पारिवारिक जीवन के विभिन्न क्रिया–कलापों के सम्पादन में कलात्मक दृष्टिकोण के साथ–साथ ..... आधार को भी प्राथमिकता दी जाती है।

(ii) एक अच्छा घर धरती पर स्वर्ग के समान होता है क्योंकि अच्छे घर में ही व्यक्ति का .....विकास होता है।

(iii) पारिवारिक शिक्षा के साथ–साथ गृह विज्ञान शिक्षा की ..... उपयोगिता भी है।

3. निम्न पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :

(i) गृह विज्ञान एक व्यावसायिक शिक्षा (ii) स्वरोज़गार (iii) गृह विज्ञान एवं स्वरोज़गार

4. पारिवारिक जीवन में गृह विज्ञान शिक्षा का क्या महत्त्व है?

5. ''गृह विज्ञान शिक्षा स्वरोजगार हेतु एक उत्तम विषय है'' पर एक निबन्ध लिखिए।

उत्तरमाला :

1. (i) स (ii) द (iii) द

2. (i) वैज्ञानिक (ii) सर्वांगीण (iii) व्यावसायिक

मॉडल प्रश्न पत्र ब्ल्यू प्रिन्ट (आंशिक संशोधित)

विषयः– इतिहास कक्षा– **XII** पूर्णांक – 80

क्रं.सं.	उद्देश्य इकाई/उप इकाई	ज्ञान				अवबोध				ज्ञानोपयोगी/अभिव्यक्ति				कौशल/मौलिकता				योग
		अति लघु	लघु.		निबं	अति लघु	लघु.		निबं	अति लघु	लघु.		निबं	अति लघु	लघु.		निबं	
			SA1	SA2			SA1	SA2			SA1	SA2			SA1	SA2		
1.	भारत का वैभवपूर्ण अतीत	1(1)					2(1)	4(1)			2(1)							9(4)
2.	भारतीय इतिहास के सवर्मिण पृष्ठ	1(1)			6(1)*		2(1)					4(1)						13(4)
3.	बाह्य आक्रमण एवं आत्मसातीकरण	2(2)				2(2)		4(1)			2(1)							10(6)
4.	मुगल आक्रमण : प्रकार और प्रभाव	2(2)		4(1)		2(2)					2(1)							10(6)
5.	उपनिवेशवादी आक्रमण			4(1)			2(1)	4(1)										10(3)
6.	आधुनिक भारत स्वाधीनता आन्दोलन		2(1)						6(1)*			4(1)						12(3)
7.	राजस्थान का स्वाधीनता संग्राम एवं एकीकरण		2(1)					4(1)				4(1)						10(3)
8.	मानचित्र																6(1)	6(1)
9.		6(6)	4(2)	8(2)	6(1)	4(4)	6(3)	16(4)	6(1)		6(3)	12(3)					6(1)	
10.		24(11)				32(12)				18(6)				6(1)				80(30)

विकल्पों की योजना :–

नोट :– कोष्ठक में बाहर की संख्या अंको की तथा भीतर प्रश्नों के लिए है।

हस्ताक्षर

मॉडल प्रश्न पत्र ब्ल्यू प्रिन्ट (आंशिक संशोधित)

विषयः– चित्रकला कक्षा– **XII** पूर्णांक – 24

क्रं.सं.	उद्देश्य इकाई/उप इकाई	ज्ञान				अवबोध				ज्ञानोपयोगी/अभिव्यक्ति				कौशल/मौलिकता				योग
		अति लघु	लघु.		निबं	अति लघु	लघु.		निबं	अति लघु	लघु.		निबं	अति लघु	लघु.		निबं	
			SA1	SA2			SA1	SA2			SA1	SA2			SA1	SA2		
1.	दक्खिनी चित्र शैली	½ (2)					½ (1)											1(3)
2.	मुगल चित्र शैली	½ (2)											2(1)					2 ½ (3)
3.	राजस्थानी लघु चित्र शैलियां								1*(1)+				2(–)					3(1)
4.	पहाड़ी चित्रकला		½ (1)	½ (1)+		½ (2)						½ (–)						2(4)
5.	कम्पनी शैली एवं राजा रवि वर्मा		½ (1)	½ (1)+				½ (–)										1½ (2)
6.	भारतीय पुनरूत्थान कालीन कला								1*(1)+								2(–)	3(1)
7.	आधुनिक कला और कलाकार	½ (2)	½ (1)					½ (1)+				½ (–)						2(4)
8.	राजस्थान की आधुनिक कला								2(1)									2(1)
9.	मध्यकालीन भारतीय मूर्तिकला और स्थापत्य	½ (2)		1(1)			½ (1)											2(4)
10.	राजस्थान की मूर्तिकला और मंदिर स्थापत्य	½ (2)						1(1)										1½ (3)
11.	आधुनिक भारतीय मूर्तिकला								1(1)+								1(–)	2(1)
12	राजस्थान की आधुनिक मूर्तिकला		1(2)				½ (1)											1½ (3)
13.		2½ (10)	2½ (5)	2(3)	–	½ (2)	1½ (3)	2(2)	5(4)	–	–	1(–)	4(1)				3(–)	24(30)
14.		7(18)				9(11)				5(1)				3(–)				24(30)

विकल्पों की योजना :–

नोट :– कोष्ठक में बाहर की संख्या अंको की तथा भीतर प्रश्नों के लिए है।

प्रश्न क्रमांक 29 व 30 में आन्तरिक विकल्प है।

हस्ताक्षर

* विकल्प प्रश्न के लिए,

\+ बहुउद्देशिय प्रश्न के लिए

मॉडल प्रश्न पत्र ब्ल्यू प्रिन्ट (आंशिक संशोधित)

विषय :–व्यवसाय अध्ययन पूर्णांक :– 80

क्रं.सं.	उद्देश्य इकाई / उप इकाई	ज्ञान				अवबोध				ज्ञानोपयोगी / अभिव्यक्ति				कौशल / मौलिकता				योग
		अति लघु	लघु.		निबं	अति लघु	लघु.		निबं	अति लघु	लघु.		निबं	अति लघु	लघु.		निबं	
			SA1	SA2			SA1	SA2			SA1	SA2			SA1	SA2		
1.	प्रबंध	2 (2)	–	–	1 (1)	–	4 (2)	4 (1)	5 (–)	–	–	–	–	–	–	–	–	16(6)
2.	अभिप्रेरणा एवं नेतृत्व	–	–	–	–	–	–	8 (2)	–	–	–	–	–	–	–	–	–	8(2)
3.	विज्ञापन	–	2 (1)	–	–	–	–	–	–	–	–	6 (1)	–	–	–	–	–	8(2)
4.	व्यापारिक विधि	1 (1)	1 (1)	–	–	1 (1)	4 (2)	–	5 (–)	–	–	4 (1)	–	–	–	–	–	16(6)
5.	उद्यमिता	1 (1)	–	–	–	1 (1)	–	4 (1)	–	–	2 (1)	–	–	–	–	–	–	8(4)
6.	बीमा	2 (2)	–	–	–	–	–	4 (1)	–	–	2 (1)	–	–	–	–	–	–	8(4)
7.	निगमीय सामाजिक उत्तरदायित्व एवं नैतिकता	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	4 (1)	–	–	–	4 (1)	–	8(2)
8.	वस्तु (माल) एवं सेवा कर	2 (2)	2 (1)	4 (1)	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	8(4)
9.																		
10.																		
11.	योग	8 (8)	5 (3)	4 (1)	1 (1)	2 (2)	8 (4)	20 (5)	10 (–)	–	4 (2)	14 (3)				4 (1)		
12.	कुल योग		**18(13)**				**40(11)**					**18(5)**			**4(1)**			**80(30)**

विकल्पों की योजना :–

नोट :– कोष्ठक में बाहर की संख्या अंको की तथा भीतर प्रश्नों के लिए है।

हस्ताक्षर

प्रश्न संख्या 28 से 30 में आन्तरिक विकल्प है।

Format Of Examination Paper (आंशिक संशोधन)

Class XII Sub - English Duration- 3-15 Hrs. M.Marks - 80

1- Weightage of marks for objectives

Sr.no	Objectives	Weightage	Percentage
1-	Knowledge	13	16.25
2-	Understanding	33	41.25
3-	Application	13	16.25
4-	Skill	21	26.25
	Total	80	100

2- Types of Question and Weightage

S.N.	Types of Question	No. of Question	Marks per Question	Marks	Percentage	Approx Time
1-	Very Short Answer	9	1	9	11.25	20 min
2-	Short Ans. I	11 1 (3x2)	2	22 | 28 6	35.00	60 min
3-	Short Ans. II	2	4	8	10.00	20 min
4-	Essay type	5	7	35	43.75	70 min
	Total	28	14	80	100	170 min

3- Weightage of Unit wise Context Review Time - 10 min

Time for Reading Question paper - 15 min

S.N.	Units	Weightage	Percentage
1.	Reading		
(i)	Unseen Passage	1x9 =9	11.25
(ii)	Note making + Abstraction	4+2 =6	07.50
2.	Writing		
(i)	Notice /Advertisement / Invitation/Poster/Argument	1x4 = 4	05.00
(ii)	Report Writing	1x7 = 7	08.75
(iii)	Letter Writing	1x7 = 7	08.75
(iv)	Speech/Article Writing	1x7 = 7	08.75
3.	Rainbow - Text Book		
(i)	An extract (poetry)	2x2 = 4	05.00
(ii)	Three SAT Question (poetry)	3x2 = 6	07.50
(i)	Four SAT Question (Prose)	4x2 = 8	10.00
(ii)	One LAT Question (Prose)	1x7 = 7	08.75
	Panorama - Text Book		
(i)	One LAT Question	1x7 = 7	08.75
(ii)	Four SAT Question	4x2 = 8	10.00

QUESTION PAPER BLUE PRINT (आंशिक संशोधित)

Subject - English **Class - XII** **Total Marks -80**

Sr.	(Objectives /Units and question nos.)	knowledge				understanding				Application				Skill				Total
		अति लघु VSA	लघु. SA1	लघु. SA2	निबं LAT	अति लघु VSA	लघु. SA1	लघु. SA2	निबं LAT	अति लघु VSA	लघु. SA1	लघु. SA2	निबं LAT	अति लघु VSA	लघु. SA1	लघु. SA2	निबं LAT	
1.	Unseen Passage (Que. 1-9)	3(3)	–	–	–	3(3)	–	–	–	3(3)	–	–	–	–	–	–	–	9(9)
2.	Note making + Abstraction (Que. 10-11)	–	–	–	–	–	–	–	–	–	2(1)	4(1)	–	–	–	–	–	6(2)
3.	Notice/ Advertisement/Invitation/Poster /Argument (Que. 12)	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	4(1)*	–	–	–	–	–	4(1)
4.	Report Writing (Que. 13)	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	7(1)*	7(1)
5.	Letter Writing (Que. 14)	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	7(1)*	7(1)
6.	Composition-Speech/Article Writing (Que. 15)	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	7(1)*	7(1)
7.	An extract from Poetry(Rainbow) (Que. 16-17)	–	4(2)*	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	4(2)
8.	Three SAT Question from Poetry(Rainbow) (Que. 18)	–	6(1)	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	6(1)
9.	Four SAT Questions from Prose (Rainbow) (Que. 19-22)	–	–	–	–	–	8(4)	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	8(4)
10.	One LAT Question from Prose (Rainbow) (Que. 23)	–	–	–	–	–	–	–	7(1)*	–	–	–	–	–	–	–	–	7(1)
11	One LAT Question (Panorama) (Que. 24)	–	–	–	–	–	–	–	7(1)*	–	–	–	–	–	–	–	–	7(1)
12.	Four SAT Question (Panorama) (Que. 25-28)	–	–	–	–	–	8(4)	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	8(4)
		3(3)	10(3)			3(3)	16(8)		14(2)	3(3)	2(1)	8(2)		–	–	–	21(3)	80(28)
कुल योग		13(6)				33(13)				13(6)				21(3)				80(28)

Note :- (i) Number of Marks is written outside the bracket and Number of Questions is written inside the bracket.

(ii) The star * marked questions have internal choices.

Signature

प्रश्न –पत्र का प्रारूप (आंशिक संशोधित)

कक्षा– 10 विषय– हिन्दी अनिवार्य अवधि– 3 घण्टे 15 मिनट पूर्णांक –80

1. उद्देश्य हेतु अंकभार –

क्र.सं.	उद्देश्य	अंकभार	प्रतिशत
1.	ज्ञान	9	11.25
2.	अवबोध / अर्थग्रहण	21	26.25
3.	ज्ञानोपयोग / अभिव्यक्ति	38	47.50
4.	कौशल / मौलिकता	12	15.00
	योग	80	100

2. प्रश्नों के प्रकार एवं अंकभार –

क्र.सं.	प्रश्नों के प्रकार	प्रश्नों की संख्या	अंक प्रति प्रश्न	कुल अंक	प्रतिशत	सम्भावित समय
1.	वस्तुनिष्ठ / बहुविकल्पात्मक					
2.	अतिलघूत्तरात्मक	9	1	9		10 मिनट
3.	लघूत्तरात्मक I **SA1**	12	2	24		35 मिनट
4.	लघूत्तरात्मक II **SA2**	04	1x3=3 3x4=12	15		75 मिनट
5.	निबंधात्मक	05	1x8=8 4x6=24	32		50 मिनट
	योग	30		80		170 मिनट

पुनरावलोकन – 10 मिनट

3. विषय वस्तु का अंकभार – पूर्व पठन – 15 मिनट

क्र.सं.	उद्देश्य	अंकभार	प्रतिशत
1.	अपठित गद्यांश	04	5
2.	अपठित पद्यांश	04	5
3.	निबंध लेखन	08	10
4.	पत्र लेखन–कार्यालय पत्र एवं व्यावसायिक	04	5
5.	क्रिया विशेषण	02	2.5
6.	कारक, काल, वाच्य	03	3.75
7.	समास	02	2.5
8.	वाक्य शुद्धि	02	2.5
9.	मुहावरा	02	2.5
10.	लोकोक्तियां	01	1.25
11.	व्याख्या (क्षितिज के पद्यांश से)	06	7.5
12.	व्याख्या (क्षितिज के गद्यांश से)	06	7.5
13.	निबन्धात्मक प्रश्न विकल्प सहित(क्षितिज के पद्यांश से)	06	7.5
14.	निबन्धात्मक प्रश्न विकल्प से (क्षितिज के गद्यांश से)	06	7.5
15.	लघूत्तरात्मक प्रश्न (क्षितिज के पद्यांश से)	12	15
16.	अति लघूत्तरात्मक प्रश्न	04	5
17.	रचनाकारों का परिचय (क्षितिज के गद्य व पद्य से)	04	5
18.	सड़क सुरक्षा	04	5
		कुल 80	100

मॉडल प्रश्न पत्र ब्ल्यू प्रिन्ट (आंशिक संशोधित)

विषय :–हिन्दी अनिवार्य　　कक्षा– 10　　पूर्णांक :– 80

क्रं.सं.	उद्देश्य इकाई/उप इकाई	ज्ञान				अवबोध				ज्ञानोपयोगी/अभिव्यक्ति				कौशल/मौलिकता				योग
		अति लघु	लघु.		निबं	अति लघु	लघु.		निबं	अति लघु	लघु.		निबं	अति लघु	लघु.		निबं	
			SA1	SA2			SA1	SA2			SA1	SA2			SA1	SA2		
1.	अपठित गद्यांश	1(1)	–	–	–	–	2(1)	–	–	–	–	–	–	1(1)	–	–		4(3)
2.	अपठित पद्यांश	1(1)	–	–	–	–	–	–	–	–	2(1)	–	–	1(1)	–	–		4(3)
3.	निबंध लेखन	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	8(1)*	8(1)
4.	पत्र लेखन	–	–	–	–	–	–	2(1)*	–	–	–	2(–)	–	–	–	–		4(1)
5.	क्रिया विशेषण	–	–	–	–	–	2(1)	–	–	–	–	–	–	–	–	–		2(1)
6.	कारक, काल, वाच्य	–	–	3(1)	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–		3(1)
7.	समास	–	–	–	–	–	–	–	–	–	2(1)	–	–	–	–	–		2(1)
8.	वाक्य शुद्धि	–	–	–	–	–	2(1)	–	–	–	–	–	–	–	–	–		2(1)
9.	मुहावरा	–	2(1)	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–		2(1)
10.	लोकोक्तियां	1(1)	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–		1(1)
11.	व्याख्या (पद्य)	–	–	–	–	–	–	–	2(1)	–	–	–	4(–)*	–	–	–	–	6(1)
12	व्याख्या (गद्य)	–	–	–	–	–	–	–	2(1)		–	–	4(–)*	–	–	–	–	6(1)
13.	क्षितिज के प्रश्नोत्तर	1(1)	–	–	–	3(3)	6(3)	–	–	–	6(3)	–	12(2)*	–	–	–	–	28(12)
14.	रचनाकार का परिचय	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	4(1)	–	–	–	–	–	4(1)
15.	सड़क सुरक्षा	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	2(1)	–	–	–	2(–)	–	4(1)
16.	कुल	4(4)	2(1)	3(1)	–	3(3)	12(6)	2(1)	4(2)	–	10(5)	8(2)	20(2)	2(2)	–	2(–)	8(1)	80(30)
17.		9(6)				21(12)				38(9)				12(3)				80(30)

विकल्पों की योजना :–

नोट :– कोष्ठक में बाहर की संख्या अंको की तथा भीतर प्रश्नों के लिए है।

हस्ताक्षर

माध्यमिक परीक्षा–2018

नमूने का प्रश्न–पत्र (आंशिक संशोधित)

कक्षा–10

विषय – हिंदी अनिवार्य

अनुक्रमांक □□□□□□□□

अवधि– 3 घण्टे 15 मिनट **पूर्णांक– 80 अंक**

खण्ड – 1

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

देश–प्रेम क्या है? प्रेम ही तो है। इस प्रेम का आलम्बन क्या है? सारा देश अर्थात् मनुष्य पशु, पक्षी, नदी, नाले, वन–पर्वत सहित सारी भूमि। यह प्रेम किस प्रकार का है? यह साहचर्यगत प्रेम है, जिनके मध्य हम रहते हैं, जिन्हें बराबर आँखों से देखते हैं, जिनकी बातें बराबर सुनते हैं, जिनका और हमारा हर घड़ी का साथ रहता है, जिनके सान्निध्य का हमें अभ्यास हो जाता है, उनके प्रति लोभ या राग हो सकता है। देश–प्रेम यदि वास्तव में अन्तःकरण का कोई भाव है तो यही हो सकता है।

1. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। 1
2. देश–प्रेम का आलम्बन क्या है? 1
3. लोभ या राग किसके प्रति उत्पन्न हो सकता है। 2

निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

चाह नहीं, मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ
चाह नहीं, सम्राटों के शव पर
हे हरि! डाला जाऊँ
चाह नहीं, देवों के सिर पर
चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ

मुझे तोड़ लेना बनमाली
उस पथ पर तुम देना फेंक
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ पर जाए वीर अनेक।

4. उपर्युक्त काव्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। 1

5. रेखांकित शब्द ''इठलाऊँ'' का अर्थ बताइए। 1

6. उपर्युक्त काव्यांश की मूल संवेदनाएँ लिखिए। 2

खण्ड – 2

7. दिए गए बिन्दुओं के आधार पर निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबन्ध लिखिए। 8

(क) कन्या भ्रूण हत्या : एक अभिशाप

(i) प्रस्तावना

(ii) कन्या भ्रूण हत्या के कारण

(iii) कन्या भ्रूण हत्या रोकने के उपाय

(iv) उपसंहार

अथवा

(ख) राष्ट्र की समृद्धि में गाय का योगदान

(i) प्रस्तावना

(ii) गो संरक्षण के उपाय

(iii) कृषि कार्य में गोवंश की उपादेयता

(iv) उपसंहार

अथवा

(ग) भारतीय संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण

(i) प्रस्तावना

(ii) वृक्ष संरक्षण

(iii) नदी पर्वत संरक्षण

(iv) उपसंहार

अथवा

(घ) यदि मैं भारत का प्रधानमंत्री होता!

(i) प्रस्तावना

(ii) सुरक्षा एवं विकास

(iii) सामाजिक समरसता

(iv) उपसंहार

8. स्वयं को उदयपुर निवासी अर्पिता मानते हुए अपने जिला पुलिस अधीक्षक को सुरक्षा संबंधी पत्र लिखिए, जिसमें आपके मोहल्ले में बाहरी लोगों द्वारा की जा रही संदेहास्पद गतिविधियों का उल्लेख हो। 4

अथवा

स्वयं को भरतपुर का पुस्तक विक्रेता अजय कुमार मानते हुए गीताप्रेस, गोरखपुर को एक पत्र लिखिए, जिसमें धार्मिक पुस्तकें खरीदने की माँग हो।

खण्ड – 3

9. क्रिया एवम् विशेषण को परिभाषित कीजिए। 2

10. ''पेड़ पर पक्षी बैठा है।'' वाक्य में निहित कारक, काल और वाच्य लिखिए। 3

11. कर्मधारय समास की सोदाहरण परिभाषा दीजिए। 2

12. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए।

(क) खरगोश को काट कर गाजर खिलाओ।

(ख) यहाँ शुद्ध गाय का दूध मिलता है। 1+1=2

13. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखिए।

(क) गूलर का फूल होना।

(ख) आँख का तारा होना। 1+1=2

14. ''डूबते को तिनके का सहारा'' लोकोक्ति का अर्थ लिखिए। 1

खण्ड – 4

15. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। 2+4=6

प्रसार तेरी दया का कितना,
ये देखना है तो देखे सागर
तेरी प्रशंसा का राग प्यारे,
तरंग मालाएँ गा रही हैं।
तुम्हारा स्मित हो जिसे निखरना,
वो देख सकता है चन्द्रिका को।
तुम्हारे हँसने की धुन में नदियाँ,

निनाद करती ही जा रही हैं।

अथवा

देखैं छिति अंबर जलै है चारि ओर छोर,
तिन तरबर सब ही कौं रूप हर्‌यौ है।
महाझर लागै जोति भादव की होति चलै,
जलद पवन तन सेक मानों पर्‌यौ है।
दारून तरनि तरैं नदी सुख पावैं सब,
सीरी घन छाँह चाहिबौई चित धर्‌यौ है।
देखौ चतुराई सेनापति कविताई की जू,
ग्रीषम विषम बरसा की सम कर्‌यौ है ।।

16. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

मान लीजिए कि पुराने जमाने में भारत की एक भी पढ़ी–लिखी न थी। न सही। उस समय स्त्रियों को पढ़ाने की जरूरत न समझी गई होगी। पर अब तो है। अतएव पढ़ाना चाहिए। हमने सैकड़ों पुराने नियमों, आदेशों और प्रणालियों को तोड़ दिया है या नहीं? तो चलिए, स्त्रियों को अपढ़ रखने की इस पुरानी चाल को भी तोड़ दें। हमारी प्रार्थना तो यह हैं कि स्त्री शिक्षा के विपक्षियों को क्षण भर के लिए भी इस कल्पना को अपने मन में स्थान न देना चाहिए कि पुराने जमाने में यहाँ की सारी स्त्रियाँ अपढ़ थीं अथवा उन्हें पढ़ने की आज्ञा न थी।

अथवा

जेलर साब! (थोड़ा दुःखी होकर) मैं एक आँख से इन्हें देखता हूँ, तो दूसरी आँख से इन्हें देश की दुःखी जनता को देखता हूँ। एक कान से इनकी पुकारें सुनता हूँ। जेलर साहब! मातृभूमि, मेरी माँ की माँ है, देश मेरे पिता का पिता है। मेरे देशवासी मेरे परिजनों से बढ़ कर हैं। यदि मेरे घरवालों के दुःख आँसू भारत माता के होठों पर सुख–स्वतंत्रता की मुस्कान रचा सके, तो मैं अपने परिवार की हर कराह, हर आँसू सहने को तैयार हूँ। 1+5=6

17. ''कन्यादान'' कविता के आधार पर कन्यादान की प्राचीन एवं आधुनिक अवधारणा स्पष्ट कीजिए। (शब्द सीमा– 200 शब्द)

अथवा

कवि देव ने श्रीकृष्ण का गुण कथन किया है'' उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। 6

18. ''आह मेरा गोपालक देश'' कहकर महादेवी वर्मा क्या संदेश देना चाहती है? ''गौरा'' संस्मरण के आधार पर स्पष्ट कीजिए। (शब्द सीमा– 200 शब्द)

अथवा

''ईर्ष्या तू न गयी मेरे मन से'' पाठ के आधार ईर्ष्यालु मनुष्य के चरित्र की कमजोरियों का वर्णन कीजिए। (शब्द सीमा– 200 शब्द) 6

19. ''सूरदास'' पाठ के आधार पर राधा–कृष्ण के मध्य हुए वार्तालाप का सारांश लिखिए। 2

20. ''राजिया रा सोरठा'' पाठ के आधार पर कवि ने हिम्मत के विषय में क्या विचार व्यक्त किये हैं? 2

21. ''अभी न होगा मेरा अंत'' कविता का केन्द्रीय भाव लिखिए। 2

22. 'एक अद्‌भुत अपूर्व स्वप्न' नामक पाठ का वर्ण्य विषय क्या है ? 2

23. 'ईदगाह' मुंशी प्रेमचंद की बाल–मनोविज्ञान को चरितार्थ करने वाली एक प्रतिनिधि कहानी है। स्पष्ट कीजिए। 2

24. दादू के 'निन्दा स्तुति' के विषय में क्या विचार थे ? 2

25. शिव धनुष भंग होने पर कौन कुपित हुआ ? 1

26. ''झहरि झहीर झीनी बूँद'' पंक्ति में कौनसा अलंकार है ? 1

27. ''आखिरी चट्‌टान'' निबंध का लेखक एक टीले से दूसरे टीले पर क्यों पहुँचना चाहता था ? 1

28. सच्चे गुरु की संगति का क्या प्रभाव पड़ता है? ''लोकसंत पीपा'' पाठ के आधार पर समझाइये। 1

29. निम्न रचनाकारों का परिचय दीजिए –

(i) मुंशी प्रेमचंद (ii) गोस्वामी तुलसीदास 4

30. सड़क पर वाहन चलाते समय क्या सावधानियाँ रखनी चाहिए ? यदि सड़क पर वाहन चलाते समय आपको कोई सड़क दुर्घटना में घायल व्यक्ति मिले तो आप क्या करेंगे ? 4

उत्तर तालिका – हिंदी

प्रश्न संख्या	अपेक्षित उत्तर	खंडवार अंक	अंक	पाठ्य पुस्तक की संख्या
1.	देश प्रेम	–	1	–
2.	सारा देश अर्थात मनुष्य, पक्षी, पशु, नदी, नाले, वन–पर्वत सहित सारी भूमि	–	1	–
3.	जिनका हर घड़ी साथ होता है जिनके सानिध्य में हम रहते है।	–	2	72
4.	पुष्प की अभिलाषा	–	1	160
5.	इतराना	–	1	165
6.	पुष्प की अभिलाषा है कि न वह सौंदर्य सामग्री के रुप में काम आना चाहता है, न वह सम्राटों के शव पर चढ़ना चाहता है, न ही देवों के मस्तक पर। अपितु वह देश के प्रति न्योछावर होने वाले वीरों के पथ पर बिछाना चाहता है।	–	2	168
7.	सम्बन्धित विषय पर सारगर्मित निबन्ध स्वीकार्य।	–	8	169
8.	उचित प्रारुप में लिखा पत्र स्वीकार्य	2+2	4	180
9.	क्रिया– जिस शब्द से किसी कार्य के करने या होने का बोध होता है। विशेषण– जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते है।	1+1	2	184
10.	अधिकरण, वर्तमान काल, कर्त्तवाच्य।	1+1+1	3	186
11.	जिस समास का प्रथम पद विशेषण और दूसरा पद विशेष्य हो। जैसे– नील गाय, काला घोड़ा, महाविद्यालय आदि।	–	2	94
12.	(क) खरगोश को काटकर गाजर खिलाओ। (ख) यहाँ गाय का शुद्ध दूध मिलता है।	1+1	2	7
13.	(क) दुर्लभ होना (ख) अत्यधिक प्रिय	1+1	2	–
14.	संकट के समय थोड़ी सी सहायता का भी बहुत महत्व होता है।	–	1	–
15.	पाठ्यपुस्तक क्षितिज के पाठ जयशंकर प्रसाद, पाठ प्रभो! प्रदत्त पद्यांश की यथा संभव सारगर्भित व्याख्याा स्वीकार्य। अथवा पुस्तक क्षितिज के पाठ सेनापति का ऋतु वर्णन, प्रदत्त पद्यांश की सारगर्भित व्याख्या स्वीकार्य।	2+4	6	21 10
16.	पाठ्यपुस्तक क्षितिज के पाठ स्त्री शिक्षा के विरोधी कुर्तकों का खंडन से प्रदत्त गद्यांश की उचित व्याख्याा स्वीकार्य। अथवा पुस्तक क्षितिज के पाठ– अमर शहीद लेखक– लक्ष्मीनारायण रंगा गद्यांश की उचित व प्रासंगिक व्याख्या स्वीकार्य।	2+4	6	56 67
17.	पाठ्यपुस्तक क्षितिज के पाठ–कन्यादान लेखक–ऋतुराज से उद्घत पाठ के आधार पर उचित व प्रासंगिक अवधारणा स्वीकार्य (प्राचीन व आधुनिक अवधारणा के संदर्भ में)। अथवा पुस्तक क्षितिज के पाठ–4 देव के अनुसार भगवान श्रीकृष्ण के गुणकथन जैसे– पीत वसन, पैरों में घुँघरु, माथे पर मोर मुकट, चंचल नयन, मंद–मंद मुस्कान।	3+3	6	32 13
18.	पाठ्यपुस्तक क्षितिज के पाठ– गौरा लेखिका– महादेवी वर्मा के अनुसार गाय के प्रति अपनत्व एवं कृतज्ञता जैसे– मानवीय भावों का उद्घाटन, गाय के प्रति आस्था और करुणा का भाव, गाय की वात्सल्यता, सीधापन साथ की मनुष्य का गाय एवं पशुओं के साथ क्रूरता एवं मनुष्य का स्वार्थी भाव स्वीकार्य।	-	6	88

उत्तर तालिका – हिंदी

	अथवा पुस्तक क्षितिज के पाठ– ईर्ष्या तू न गयी मेरे मन से लेखक– रामधारी सिंह दिनकर के संदर्भ में– ईष्यालु व्यक्ति दूसरों से ईर्ष्या कर अपने जीवन मूल्यों का ह्रास करता है। वह उन्नति नहीं कर सकता, वह उपलब्ध साधनों का आनन्द भी नहीं उठा सकता आदि भाव स्वीकार्य।			82
19.	पाठ्यपुस्तक क्षितिज के पाठ–सूरदास के संदर्भ में पद संख्या 01 का भावार्थ स्वीकार्य	–	2	01
20	पाठ्यपुस्तक क्षितिज के पाठ– राजिया रा सोरण संख्या 07 पद के अनुसार भाव स्वीकार्य	–	2	17
21.	पाठ्यपुस्तक क्षितिज के पाठ– अभी न होगा मेरा अन्त, कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का केन्द्रीय भाव जीवन में निराश न होना, कर्म करते रहना, आशावादी होना एवं जीने की इच्छा से पूर्ण सम्बंधी भाव स्वीकार्य	–	2	24
22.	पाठ्यपुस्तक क्षितिज के पाठ– एक अद्भूत अपूर्व स्वप्न लेखक– भारतेन्दु हरिशचन्द्र के अनुसार मनुष्य द्वारा यश प्राप्ति की कामना एवं नाम अमर करने की लालसा में किए जाने वाले विभिन्न कार्य।	–	2	34
23.	क्षितिज के पाठ–ईदगाह में चित्रित बाल मन के उतार–चढ़ाव, लालच और सरल प्रेम से सम्बन्धित उत्तर स्वीकार्य।	–	2	39
24.	परनिंदा नहीं करें। निंदा वह व्यक्ति करता है जिसके ह्रदय में राम का वास नहीं है।	–	2	99
25.	परशु राम	–	1	5
26.	अनुप्रास	–	1	14
27.	पाठ्यपुस्तक क्षितिज के पाठ– 'आखिरी चट्टान' के अनुसार लेखक पश्चिमी क्षितिज का विस्तार देखना चाहता है।	–	1	74
28.	पाठ्यपुस्तक क्षितिज के पाठ– लोक संत पीपा के अनुसार मनुष्य सांसारिक मोह माया त्यागकर भव सागर को पार कर सकता है।	-	1	101
29.	पाठ्य पुस्तक में वर्णित विवरण से सम्बन्धित उत्तर स्वीकार्य।	2+2	4	04 व 39
30.	यातायात के नियमों का पालन करने सम्बंधी एवं दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति के साथ मदद का व्यवहार करने सम्बंधी उत्तर स्वीकार्य।	2+2	4	39

Format Of Examination Paper (आंशिक संशोधित)

Class X Sub - English Duration- 3-15 Hrs. M.Marks - 80

1- Weightage of marks for objectives

Sr.no	Objectives	Weightage	Percentage
1-	Knowledge	06	07.50
2-	Understanding	16	20
3-	Application	48	60
4-	Skill	10	12.50
	Total	80	100

2- Types of Question and Weightage

S.N.	Types of Question	No. of Question	Marks per Question	Marks	Percentage	Approx Time
1-	Very Short Answer	06	01	06	7.50	30 min
2-	Short Ans. I	07	02	14	17.50	30 min
3-	Short Ans. II	7 4	4 3	28 12 | 40	50.00	50 min
4-	Essay type	04	5	20	25.00	60 min
	Total	28		80	100	170 min

3- Weightage of Unit wise Content Review Time - 10 min

Time for Reading Question paper - 15 min

S.N.	Units	Weightage	Percentage
1	Unseen Passage 2	14	17.50
2	composition /letter writing	5	6.25
3	Short pragraph	4	5
4	Long pragraph	5	6.25
5	Tenses	4	5
6	Clauses	3	3.75
7	active & passive voice	2	2.50
8	Direct & Indirect Speech	4	5
9	Modals	2	2.50
10	Golden rays ..... passage --- 2	8	10
11	Textual Questions	6	7.50
12	Poetry	9	11.25
13	Resolution - Textual Questions	10	12.50
14	Road Safety Education	4	5
	Total	80	100

QUESTION PAPER BLUE PRINT (आंशिक संशोधित)

Subject - English **Class - X** **Total Marks -80**

Sr.	(Objectives /Units and question nos.)	knowledge				understanding				Application				Skill				Total
		अति लघु VSA	लघु. SA1	लघु. SA2	निबं LAT	अति लघु VSA	लघु. SA1	लघु. SA2	निबं LAT	अति लघु VSA	लघु. SA1	लघु. SA2	निबं LAT	अति लघु VSA	लघु. SA1	लघु. SA2	निबं LAT	
1.	Unseen Passage 2	4(2)					6(6)	4(2)										14(10)
2.	Letter writing												5(1)					5(1)
3.	Short pragraph												4(1)					4(1)
4.	Long pragraph															5(1)		5(1)
5.	Tenses									4(1)								4(1)
6.	Clauses											3(1)						3(1)
7.	Passive construction											2(1)						2(1)
8.	Narration											4(1)						4(1)
9.	Modals									2(1)								2(1)
10.	Golden rays ..... passage --- 2	2(2)					4(–)				2(–)							8(2)
11	Textual Questions							3(1)				3(1)						6(2)
12.	Poetry										4(1)					5(1)		9(2)
13.	Resolution - Textual Questions											10(3)						10(3)
14.	Road Safety Education												4(1)					4(1)
		6(4)					10(6)	7(3)	–	6(2)	6(1)	22(7)	13(3)			10(2)		80(28)
कुल योग		6(4)				17(9)				47(13)				10(2)				80(28)

Note :- (i) Number of Marks is written outside the bracket and Number of Questions is written inside the bracket.

(ii) The star * marked questions have internal choices. 1

Signature

प्रश्न –पत्र का प्रारूप (आंशिक संशोधित)

कक्षा– 12 विषय– हिन्दी अनिवार्य अवधि– 3.15 मिनट पूर्णांक – 80

1. उद्देश्य हेतु अंकभार –

क्र.सं.	उद्देश्य	अंकभार	प्रतिशत
1.	ज्ञान	10	12.5%
2.	अवबोध / अर्थग्रहण	32	40 %
3.	ज्ञानोपयोग / अभिव्यक्ति	26	32.5 %
4.	कौशल / मौलिकता	12	15 %
	योग	80	100 %

2. प्रश्नों के प्रकार एवं अंकभार –

क्र.सं.	प्रश्नों के प्रकार	प्रश्नों की संख्या	अंक प्रति प्रश्न	कुल अंक	प्रतिशत	सम्भावित समय
1.	वस्तुनिष्ठ / बहुविकल्पात्मक	–	–	–	–	–
2.	अतिलघूत्तरात्मक	02	02	04	05 %	8 मिनट
3.	लघूत्तरात्मक ।	16+2=18	2x16=32 4x2=08	32+8=40	50 %	64+16=80 मिनट
4.	लघूत्तरात्मक ।।	02	03	06	7.5 %	12 मिनट
5.	निबंधात्मक	07	4x6=24 1x6=06	24+6=30	37.5 %	58+12=70मिनट
	योग	29		80	100 %	170 मिनट

विकल्प योजना : आन्तरिक

पुनरावलोकन –10 मिनट

प्रश्न पत्र पढ़ना –15 मिनट

कुल – 195 मिनट

3. विषय वस्तु का अंकभार –

क्र.सं.	इकाई	अंकभार	प्रतिशत
1.	खण्ड–। – अपठित बोध	8	10 %
2.	खण्ड–2 – व्यावहारिक व्याकरण भाषा, लिपि व्याकरण	2	2.5 %
	खण्ड–2 – पद परिचय	2	2.5 %
	खण्ड–2 – शब्द शुद्धि	2	2.5 %
	खण्ड–2 – अलंकार	2	2.5 %
	खण्ड–2 – पारिभाषिक शब्द	2	2.5 %
	खण्ड–2 – पत्र व प्रारूप लेखन	2	2.5 %
	खण्ड–2 – निबन्ध	4	5 %
3.	खण्ड–3 – सृजन गद्य व पद्य	32	40 %
4.	खण्ड–4 – पीयूष प्रवाह	12	15 %
5.	खण्ड–5 – संवाद सेतु	12	15 %
	योग	**80**	**100 %**

मॉडल प्रश्न पत्र ब्ल्यू प्रिन्ट (आंशिक संशोधित)

कक्षा–12 विषय :–हिन्दी अनिवार्य अवधि– 3.15 मिनट पूर्णांक :– 80

क्र.सं.	उद्देश्य इकाई/उप इकाई	ज्ञान				अवबोध				ज्ञानोपयोगी/अभिव्यक्ति				कौशल/मौलिकता				योग
		अति लघु	लघु.		निबं	अति लघु	लघु.		निबं	अति लघु	लघु.		निबं	अति लघु	लघु.		निबं	
			SA1	SA2			SA1	SA2			SA1	SA2			SA1	SA2		
1.	खण्ड–1 अपठित गद्यांश, पद्यांश						4(2)				2(–)				2(–)			8(2)
2.	खण्ड–2 भाषा, व्याकरण, लिपि		1(1)				1(–)											2(1)
3.	पद परिचय						1(1)				1(–)							2(1)
4.	शब्द शक्ति		1(1)								1(–)							2(1)
5.	अलंकार						1(1)				1(–)							2(1)
6.	पारिभाषिक शब्द		2(1)															2(1)
7.	पत्र व प्रारूप लेखन						1(1)				1(–)							2(1)
8.	निबन्ध								2(1)				1(–)				1(–)	4(1)
9.	खण्ड–3 सृजन	2(2)				1(–)	4(2)		9(5)	1(–)	2(1)		7(–)		2(1)		4(–)	32(11)
10.	खण्ड–4 पीयूष प्रवाह						3(3)		2(1)		3(–)		3(–)				1(–)	12(4)
11.	खण्ड–5 संवाद सेतु		4(2)				1(–)	2(2)			1(–)	2(1)	–		1(–)	1(–)		12(5)
	योग	**2(2)**	**8(5)**			1(–)	**16(10)**	**2(2)**	**13(7)**	1(–)	**12(1)**	**2(1)**	**11(–)**		**5(1)**	**1(–)**	**6(–)**	
	कुल योग	**10(7)**				**32(19)**				**26(2)**				**12(1)**				**80(29)**

विकल्पों की योजना :– आन्तरिक विकल्प प्रश्न नोट :– कोष्ठक में बाहर की संख्या अंको की तथा भीतर प्रश्नों के लिए है।

प्रश्न 9 व 18 में एकांतिक खण्डात्मक विकल्प हैं।

प्रश्न 10, 11, 12, 13 23, व 24 में खण्डात्मक आन्तरिक विकल्प है।

हस्ताक्षर

उच्च माध्यमिक परीक्षा–2018

नमूने का प्रश्न–पत्र (आंशिक संशोधित)

कक्षा–12

विषय – हिंदी अनिवार्य

अनुक्रमांक □□□□□□□□

अवधि– 3 घण्टे 15 मिनट **पूर्णांक– 80 अंक**

खण्ड – 1

प्रश्न 1. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए– (उत्तर सीमा 20 से 30 शब्द) 2 + 2 = 4

अहंकार, क्रोध या द्वेष हमारे मन की बाधक प्रवृत्तियाँ हैं। यदि हम इनको बेरोक–टोक चलने दें, तो निःसंदेह वह हमें नाश और पतन की ओर ले जाएगी, इसलिए हमें उनकी लगाम रोकनी पड़ती है, उन पर संयम रखना पड़ता है, जिससे वे अपनी सीमाओं से बाहर न जा सकें। हम उन पर जितना कठोर संयम रख सकते है, उतना ही मंगलमय हमारा जीवन हो जाता है।

किंतु नटखट लड़कों से डाँटकर कहना– तुम बड़े बदमाश हो, हम तुम्हारे कान पकड़कर उखाड़ लेंगे– अक्सर व्यर्थ ही होता है। बल्कि उस प्रवृत्ति को और हठ की ओर ले जाकर पुष्ट कर देता है। जरूरत यह होती है कि बालक में जो सद्‌वृत्तियाँ हैं, उन्हें ऐसा उत्तेजित किया जाए कि दूषित वृत्तियाँ स्वाभाविक रूप से शांत हो जाए। इसी प्रकार मनुष्य को भी संयम के लिए आत्मविश्वास की आवश्यकता होती है। साहित्य ही मनोविकारों के रहस्य को खोलकर सद्‌वृत्तियों को जगाता है। सत्य के रसों द्वारा हम जितनी आसानी से प्राप्त कर सकते हैं, ज्ञान और विवेक द्वारा नहीं कर सकते। उसी भाँति जैसे दुलार पुचकार कर बच्चों को जितनी सफलता से वश में किया जा सकता है, डाँट–फटकार से संभव नहीं। साहित्य मस्तिष्क की वस्तु नहीं, हृदय की वस्तु है। जहाँ ज्ञान और उपदेश असफल होता है, वहाँ साहित्य बाजी मार ले जाता है।

(अ) हमारा जीवन मंगलमय कब हो जाता है? 2

(ब) ''साहित्य हृदय की वस्तु है'' कैसे 2

प्रश्न 2. निम्नलिखित अपठित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए– (उत्तर सीमा 20–30 शब्द) 2 + 2 = 4

धर कर चरण विजित शृंगों पर
झण्डा वही उड़ाते हैं,
अपनी ही उँगुली पर जो
खंजर की जंग छुड़ाते हैं।
पड़ी समय से होड़
खींच मत तलवों से काँटें रूककर,
फूँक–फूँक कर चलती न जवानी
काँटों से बचकर, झुककर।
नींद कहाँ उनकी आँखों में,
जो धुन के मतवाले हैं।
गति की तृष्णा और बढ़ती है,
पड़ते जब पग में छाले हैं।
जागरूक की जय निश्चित है,
हार चुके सोने वाले।
लेना अनल–किरीट भाल पर,
ओ! आशिक होने वाले।

(अ) कवि के अनुसार ''गति की तृष्णा'' से क्या अभिप्राय है और वह कब बढ़ती है? 2

(ब) कवि ने जवानी की क्या विशेषता बताई है? 2

खण्ड – 2

प्रश्न 3. निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर एक पंक्ति में दीजिए– 1+1=2

(अ) भाषा के कौन से दो रूप होते हैं? 1

(ब) व्याकरण किसे कहते हैं? 1

प्रश्न 4. रेखांकित शब्दों का पद परिचय दीजिए। 1+1=2

(अ) यह <u>सुन्दर</u> खिलौना मुझे दो। 1

(ब) रवि बहुत <u>भाग्यशाली</u> है। 1

प्रश्न 5. अभिधा व लक्षणा शब्द–शक्ति में अन्तर बताइए। 2

प्रश्न 6. विरोधाभास अलंकार को उदाहरण सहित समझाइए। 2

प्रश्न 7. निम्नलिखित शब्दों के हिन्दी में अर्थ लिखिए। 2

(अ) Abalition

(ब) Census

प्रश्न 8. जिला कलेक्टर, उदयपुर की ओर से राजस्व सचिव राजस्थान सरकार को स्वच्छता अभियान हेतु बजट स्वीकृति जारी करने हेतु सरकारी पत्र लिखिए। 2

प्रश्न 9 निम्न विषयों में से किसी एक पर लगभग 300 शब्दों में सारगर्भित निबंध लिखिए– 4

(क) राष्ट्रनिर्माण में युवा पीढ़ी की भूमिका

(ख) राजस्थान में पर्यटन की सम्भावनाएँ

(ग) इंटरनेट : सूचना एवं ज्ञान का भण्डार

(घ) मेरी प्रिय पुस्तक

खण्ड – 3

प्रश्न 10. निम्न पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। (शब्द सीमा – 80 शब्द) 4

जाति न पूछो साधु की पूछि लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान।।
संगत कीजै साधु की कभी न निष्फल होय।
लोहा पारस परस ते, सो भी कंचन होय।।

अथवा

आखिरकार वही हुआ जिसका मुझे डर था
जोर जबरदस्ती से
बात की चूड़ी मर गई
और वह भाषा में बेकार घूमने लगी।
हार कर मैंने उसे कील की तरह
उसी जगह ठोक दिया।

प्रश्न 11. निम्न गद्यांश की सप्रंसग व्याख्या कीजिए। (शब्द सीमा – 80 शब्द) 4

'भय' नामक मनोविकार दुःखात्मक संवर्ग का भाव है। मनुष्य जीवन में प्राणि जगत की सत्ता में सुख और दुःख मूल आधार हैं, मूल प्रवृत्ति है। शुक्ल जी ने इस विचार–प्रधान निबंध में भय की अनुभूति को लोक व्यवहार की दृष्टि से बड़ी सूक्ष्मता और विशदता से स्पष्ट किया है जिस पर अपना वश न हो ऐसे कारण से पहुँचने वाले भावी अनिष्ट के निश्चय से जो दुःख होता है, वह भय कहलाता है। छोटे बालक को, जिसमें यह निश्चयात्मिका बुद्धि नहीं होती, भय कुछ भी नहीं होता। जब हमारी इंद्रियाँ दूर से आने वाली क्लेश कारिणी बातों का पता देने लगती है ; तब हमारा अन्तःकरण भावी आपदा का निश्चय कराने लगता है, तब हमारा काम दुःख मात्र से

नहीं चल सकता है, बल्कि भागने या बचने की प्रेरणा करने वाले भय से चल सकता है।

अथवा

बाजार में एक जादू है। वह जादू आँख की राह काम करता है। वह रुप का जादू है पर जैसे चुम्बक का जादू लोहे पर ही चलता है, वैसे ही इस जादू की भी मर्यादा है। जेब भरी हो और मन खाली हो, ऐसी हालत में जादू का असर खूब होता है। जेब खाली पर मन भरा न हो, तो भी जादू चल जाएगा। मन खाली है तो बाजार की अनेकानेक चीजों का निमंत्रण उस तक पहुँच जाएगा। कहीं हुई उस वक्त जेब भरी तब तो फिर वह मन किसकी मानने वाला है? मालूम होता है यह भी लूँ, वह भी लूँ। सभी सामान जरुरी और आराम को बढ़ाने वाला मालूम होता है। पर यह सब जादू का असर है।

प्रश्न 12. ''किसान का जीवन त्याग और मेहनत का जीवन है।'' इस कथन पर अपने विचार लिखिए। (शब्द सीमा – 80 से 100 शब्द) 4

अथवा

पर्वतीय क्षेत्रों के प्राकृतिक सौंदर्य पर एक लेख लिखिए।
(शब्द सीमा – 80 से 100 शब्द)

प्रश्न 13. शमशेर बहादुर सिंह की 'उषा' कविता का प्रकृति वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
(शब्द सीमा – 80 से 100 शब्द) 4

अथवा

'मेरा नया बचपन' कविता की मूल संवेदना लिखिए। (शब्द सीमा–100)

प्रश्न 14. सूरदास के पदों की काव्यगत विशेषता लिखिए।
(शब्द सीमा – 20 से 30 शब्द) 2

प्रश्न 15. 'जगत के चतुर चितेरे को भी मूढ़ बनना पड़ा'
बिहारी ने ऐसा क्यों कहा है? (शब्द सीमा – 20 से 30 शब्द) 2

प्रश्न 16. इंग्लैण्ड में विरोधी पक्ष के लिए क्या–क्या सहूलियत व सुविधाएँ है? 'सफल प्रजातंत्र के लिए आवश्यक बातें पाठ के आधार पर बताइए। (शब्द सीमा – 20 से 30 शब्द) 2

प्रश्न 17. 'मैं और मैं' पाठ के आधार पर बताइए हमारा हमारे प्रति क्या अधिकार है?
(शब्द सीमा – 20 से 30 शब्द) 2

प्रश्न 18. कवि 'भूषण' अथवा लेखक 'उपेन्द्रनाथ अश्क' का साहित्यिक परिचय दीजिए।
(शब्द सीमा 80 शब्द) 4

प्रश्न 19. हरिवंशराय बच्चन की दो रचनाओं के बारे में लिखिए।
(शब्द सीमा – 20 से 30 शब्द) 2

प्रश्न 20. 'ममता' कहानी के लेखक व उनकी दो विशेषताएं बताइए।
(शब्द सीमा – 20 से 30 शब्द) 2

खण्ड – 4

प्रश्न 21. 'उसने कहा था' कहानी के आधार पर सूबेदारनी के चरित्र की कोई दो विशेषताएँ लिखिए। (शब्द सीमा – 20 से 30 शब्द) 2

प्रश्न 22. गाँधीजी के अनुसार आत्मा के विकास का क्या अर्थ है?
(शब्द सीमा – 20 से 30 शब्द) 2

प्रश्न 23. गौरा को मृत्यु से बचाने के लिए महादेवी जी ने क्या–क्या प्रयास किए?
(शब्द सीमा – 20 से 30 शब्द) 2

अथवा

सूरजमल की राष्ट्रीय भावना से सम्बंधित किसी एक घटना का वर्णन कीजिए।

प्रश्न 24. ''रत्नावली का चरित्र आदर्श भारतीय नारी का प्रतिबिम्ब है।'' पाठ में आए घटनाक्रम के आधार पर स्पष्ट कीजिए। (शब्द सीमा – 60 से 80 शब्द) 6

अथवा

अजंता, ऐलोरा व ऐलीफेण्टा की गुफाओं के सौंदर्य का वर्णन पाठ के आधार पर कीजिए।

खण्ड – 5

प्रश्न 25. रेडियो के लिए समाचार लेखन में किन बातों का ध्यान रखना चाहिए? 2

प्रश्न 26. सम्पादकीय क्या है? 2

प्रश्न 27. साक्षात्कार कितने प्रकार के होते है?
(प्रश्न सं. 28 से 29 के उत्तर की शब्द सीमा 40–60 है।) 2

प्रश्न 28. खेल पत्रकारिता पर एक टिप्पणी लिखिए।
(शब्द सीमा – 40 से 60 शब्द) 3

प्रश्न 29. रिपोर्ट ओर रिर्पोताज में क्या अंतर है?
(शब्द सीमा – 40 से 60 शब्द) 3

उत्तर तालिका – हिन्दी (आंशिक संशोधित)

प्रश्न संख्या	अपेक्षित उत्तर	खंडवार अंक	अंक	पाठ्य पुस्तक की संख्या
1. (अ)	जब हम अहंकार, क्रोध व द्वेष जैसी दुष्प्रवृत्तियों पर नियंत्रण रखते है, भाव वाले उत्तर स्वीकार्य।	2		अपठित
(ब)	साहित्य मनुष्य की सद्वृत्तियों को जगाता है। अहंकार, क्रोध व द्वेष जैसे मनोभावों को उद्वेलित करता है। अतः साहित्य ह्रदय की वस्तु है। (सम्बन्धित भाव वाले उत्तर स्वीकार्य)	2	4	–
2. (अ)	'गति की तृष्णा' से अभिप्राय आगे बढ़ने की प्रबल इच्छा से है और यह इच्छा तब अधिक बलवती हो जाती है, जब राह में बाधाएँ अधिकाधिक हों। (सम्बन्धित भाव वाले उत्तर स्वीकार्य)	1+1	2	–
(ब)	जवानी उत्साह व आशा से परिपूर्ण होती है। (भाव वाले उत्तर स्वीकार्य)	2	4	–
3.	(अ) (i) मौखिक (ii) लिखित (ब) भाषा को शुद्ध लिखने व बोलने सम्बन्धी जानकारी देने वाले शास्त्र को व्याकरण कहते है।	1+1	2	2
4.	(अ) सुन्दर– गुणवाचक, खिलौना विशेष्य का विशेषण (ब) भाग्यशाली– गुण वाचक विशेषण पु. एकवचन एवं रवि की विशेषता बताने वाला।	1+1	2	37
5.	अमिधा शब्द शक्ति में किसी शब्द के सबसे साधारण, लोक प्रचलित अथवा मुख्य अर्थ का बोध होता है जबकि लक्षणा शब्द शक्ति में किसी शब्द के मुख्यार्थ में बाधा होने पर अन्य अर्थ किसी लक्षण पर अथवा रुढ़ अर्थ पर आधारित होता है।(सम्बन्धित उत्तर स्वीकार्य)	–	2	38
6.	जहाँ वास्तविक विरोध न होते हुए भी विरोध का आभास हो वहाँ विरोधाभास अलंकार होता है। (उचित उदाहरण स्वीकार्य)	2	2	161
7.	(अ) उन्मूलन/समाप्ति (ब) जनगणना	1+1	2	–
8.	उचित प्रारूप में लिखा गया पत्र स्वीकार्य।	½+1+½	2	170
9.	सम्बन्धित विषय पर सारगर्भित निबंध स्वीकार्य।	–	4	–
10.	पाठ्यपुस्तक – सृजन अध्याय – संतवाणी कवि – कबीर सज्जन व्यक्ति की महिमा से सम्बन्धित उत्तर स्वीकार्य अथवा पाठ्यपुस्तक – सृजन अध्याय – कविता के बहाने, बात सीधी थी पर कवि – कुँवर नारायण पंक्तियाँ भाषा की सहजता पर बल देती है। ज्यादा घुमावदार भाषा के चक्कर में कभी–कभी सीधी बात भी उलझ कर अग्राहय बन जाती है। (सम्बन्धित व्याख्या स्वीकार्य)	1+3 1+3	4	2 सृजन 29 सृजन
11.	पाठ्यपुस्तक – सृजन अध्याय – भय लेखक – आचार्य रामचंद्र शुक्ल (सम्बन्धित व्याख्या स्वीकार्य) अथवा पाठ्यपुस्तक – सृजन अध्याय – बाजार दर्शन लेखक – जैनेन्द्र (सम्बन्धित व्याख्या स्वीकार्य)	1+3 1+3	4	36 सृजन 44 सृजन
12.	किसान के जीवन की समस्याओं को दर्शाने वाले उत्तर स्वीकार्य	4		49 सृजन

उत्तर तालिका – हिन्दी (आंशिक संशोधित)

	अथवा पर्वतीय क्षेत्रों का सौन्दर्यपरक वर्णन वाले उत्तर स्वीकार्य	4	4	70
13.	प्रस्तुत कविता ऊषा भोर के समय होने वाले सूर्योदय का अनूठा शब्द चित्र है। सूर्योदय के दृश्यों को मनोहारी घरेलू बिम्बों में बदलकर कवि ने प्रभावी ढ़ंग से प्रस्तुत किया है। अथवा 'मेरा नया बचपन' कविता में जीवन की बाल्यावस्था को जिस सादगी और भाव प्रवणता के साथ सुभ्रदाकुमारी चौहान ने ढाला, वह उनकी विशिष्ट उपलब्धि है। अपनी बेटी के साथ लेखिका का खोया हुआ बचपन पुनः लौट आता है।	4 4	 4	21 सृजन 33 सृजन
14.	अनन्यता, एकनिष्ठ भक्ति, विरह वेदना, सगुण के पक्षधर, ब्रजभाषा आदि	–	2	7 सृजन
15.	श्रीकृष्ण के सौंदर्य वर्णन में असफल होने के कारण	–	2	15 सृजन
16.	विरोधी पक्ष के नेता को सरकारी खजाने से वेतन, सेक्रेटरी, सांकेतिक लेखक, दूसरे कर्मचारी व लोकसभा भवन में पृथक कमरा आदि सुविधाएँ।	-	2	58 सृजन
17.	मेरा अपने प्रति यह अधिकार हैं कि मैं हार जाऊँ, थक जाऊँ, गिर भी पड़ूँ और भूलूँ–भटकूँ भी परन्तु इन सबसे निराश न होऊँ।	–	2	95 सृजन
18.	कवि 'भूषण' अथवा उपेन्द्रनाथ 'अश्क' का उचित परिचय स्वीकार्य	–	4	18/71
19.	हरिवंश राय बच्चन की किन्हीं दो रचनाओं का नाम व संक्षिप्त वर्णन स्वीकार्य।	–	2	24
20.	जयशंकर प्रसाद व उनकी साहित्यिक दो विशेषताएँ स्वीकार्य।	–	2	86
21.	आदर्श पत्नी, वात्सल्यमयी माँ आदि	–	2	10 पीयूष प्रवाह
22.	चरित्र का निर्माण करना, ईश्वर का ज्ञान पाना, आत्म ज्ञान प्राप्त करना।		2	17 पीयूष प्रवाह
23.	गौरा को बचाने हेतु लखनऊ, कानपुर और स्थानीय पशु विशेषज्ञों को बुलाया। इन्जेक्शन आदि से उपचार कराया। अथवा पाठ्य अंतर्गत आए घटनाक्रम में से कोई एक घटना स्वीकार्य	2 2	 2	26 पीयूष प्रवाह 49 पीयूष प्रवाह
24.	उचित भाव के उत्तर स्वीकार्य	–	6	106
25.	रेडियो हेतु समाचार लेखन में भाषा सरल, वाक्य छोटे, बहुप्रचलित शब्दों का प्रयोग आदि।	–	2	42 संवाद सेतु
26.	किसी भी घटना या प्रकरण पर समाचार पत्र की टिप्पणी या विचार।	–	2	52 संवाद सेतु
27.	(1) विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं या नौकरियों हेतु (2) रेडियो, टीवी, समाचार पत्र हेतु	–	2	59 संवाद सेतु
28.	खेल पत्रकारिता से सम्बन्धित उत्तर स्वीकार्य	-	3	67 संवाद सेतु
29.	रिपोर्ट साहित्यिक विधा नहीं है, रिर्पोताज है। रिपोर्ट– यथास्थिति का वर्णन रिर्पोताज– कलात्मकता के साथ वर्णन आदि उत्तर स्वीकार्य	-	3	74 संवाद सेतु

उच्च माध्यमिक परीक्षा–2018

नमूने का प्रश्न–पत्र (आंशिक संशोधित)

कक्षा–12

विषय – हिंदी साहित्य

अनुक्रमांक □□□□□□□□

अवधि– 3 घण्टे 15 मिनट **पूर्णांक– 80 अंक**

खण्ड – 1

प्रश्न 1. भारतेन्दु युग को पुनर्जागरण काल क्यों कहा जाता है? इस काल के गद्य साहित्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। (उत्तर सीमा 80 शब्द) 2+2=4

प्रश्न 2. प्रसाद के नाटकों की विशेषताओं का वर्णन करते हुए प्रमुख नाटकों का उल्लेख करिए। (उत्तर सीमा 80 शब्द) 3+1=4

प्रश्न 3. रेखाचित्र'' व 'संस्मरण' को परिभाषित करते हुए अंतर स्पष्ट कीजिए। (उत्तर सीमा 80 शब्द) $1\frac{1}{2}+1\frac{1}{2}+1=4$

प्रश्न 4. आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के साहित्यिक योगदान को स्पष्ट करें। (उत्तर सीमा 80 शब्द) 4

खण्ड – 2

प्रश्न 5. माधुर्य गुण की परिभाषा दीजिए। (उत्तर सीमा 10 शब्द) 1

प्रश्न 6. श्रुति कटुत्व दोष का उदाहरण दीजिए। (उत्तर सीमा 10 शब्द) 1

प्रश्न 7. कुण्डलिया छंद की परिभाषा उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। (उत्तर सीमा 60 शब्द) 2+1=3

प्रश्न 8. 'गीतिका' व 'हरिगीतिका' की परिभाषा देते हुए अंतर स्पष्ट कीजिए। (उत्तर सीमा 60 शब्द) 2+1=3

प्रश्न 9. 'प्रतीप' अलंकार की परिभाषा उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। 'व्यतिरेक' व 'प्रतीप' में अंतर स्पष्ट कीजिए। (उत्तर सीमा 80 शब्द) 2+1+1=4

प्रश्न 10. 'अन्योक्ति' अलंकार को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। (उत्तर सीमा 80 शब्द) 2+2=4

खण्ड – 3

प्रश्न 11. निम्नांकित गद्यांशों में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या अधिकतम 60 शब्दों में कीजिए–

भारतवर्ष पर प्रकृति की विशेष कृपा रही है। यहाँ सभी ऋतुएँ समय पर आती है और पर्याप्त काल तक ठहरती हैं। ऋतुएँ अपने अनुकूल फल–फूलों का सृजन करती हैं। धूप और वर्षा के समय अधिकार के कारण यह भूमि शस्यश्यामला हो जाती है। यहाँ का नगाधिराज हिमालय कवियों को सदा से प्रेरणा देता आ रहा है और यहाँ की नदियाँ मोक्षदायिनी समझी जाती रही हैं। यहाँ कृत्रिम धूप और रोशनी की आवश्यकता नहीं पड़ती। भारतीय मनीषी जंगल में रहना पसंद करते थे। वृक्षों में पानी देना एक धार्मिक कार्य समझते हैं। सूर्य और चंद्र दर्शन नित्य और नैमित्तिक कार्यों में शुभ माना जाता है। 1+2=3

अथवा

जीवन के सभी क्षेत्रों में भारत के मनीषियों ने अद्‌भुत आविष्कार किए थे। बात अंतरिक्ष विज्ञान की हो, रसायन विज्ञान की हो, भौतिक विज्ञान की हो, चिकित्सा विज्ञान की हो अथवा निर्माण विज्ञान की । आधुनिक भारतीय वैज्ञानिकों में सर जे.सी.बोस, सी.वी. रमन, डॉ. होमी जहाँगीर भाभा, ए.पी.जे. अब्दुल कलाम आदि की वैज्ञानिक उपलब्धियों को हम कैसे विस्मृत कर सकते हैं? भारतीय वैज्ञानिकों द्वारा न्यूनतम खर्च में अपना स्वदेशी उपग्रह मंगल ग्रह पर भेजना आज भी आश्चर्यचकित कर रहा है। अमेरिका हमारी बौद्धिक क्षमता से भयभीत है। जिन लोगों ने हिन्दुस्तान के गौरवपूर्ण अतीत को सामने लाने का प्रयास किया भी, उन्हें संकुचित मस्तिष्क का एवं प्रतिगामी बताकर उपेक्षित किया।

प्रश्न 12. निम्नांकित पद्यांशों में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या अधिकतम 60 शब्दों में कीजिए–

मलय समीर सुभ सौरभ धरन धीर,
सरबर नीर जन मन्जन के काज के।
मधुकर पुंज पुनि मंजुल करत गूँज,
सुधरत कुंज सम सदन समाज के।।
व्याकुल वियोगी, जोग कै सकै न जोगी, तहाँ,
विहरत भोगी सेनापति सुख साज के।
सघन तरू लसत, बौलें पिक–कुल सत,
देखौ हिय हुलसत आए रितुराज के।। 1+2=3

अथवा

न्योयोचित अधिकार माँगने
से न मिले, जो लड़ के,
तेजस्वी छीनते समर को
जीत, या कि खुद मरके।

किसने कहा, पाप है समुचित
स्वत्व–प्राप्ति–हित लड़ना?
उठा न्याय का खड्ग समर में
अभय मारना–मरना?

प्रश्न 13. मैं सोचता हूँ कि पुराने की अधिकार लिप्सा क्यों नहीं समय रहते सावधान हो जाती? 'शिरीष के फूल' अध्याय के आधार पर उपर्युक्त कथन की व्याख्या करते हुए वर्तमान राजनीति में इसकी प्रासंगिकता बताइए। (उत्तर सीमा 80 शब्द) 4

अथवा

''अब कुछ नहीं हो सकता..... इस देश का भगवान ही मालिक है।'' आज देशवासियों की यह पंक्ति लेखक को क्यों झकझोर देती है? इस कथन के प्रति अपने मौलिक विचार भी लिखिए।

प्रश्न 14. ''रहीम की रचनाएँ जीवन रस से परिपूर्ण है।''

उपर्युक्त कथन की समीक्षा उदाहरण सहित पठित अध्याय के आधार पर कीजिए। (उत्तर सीमा 80 शब्द) 4

अथवा

कवि सुमित्रानन्दन पंत की कविता 'भारतमाता' का प्रतिपाद्य बताते हुए उदाहरण सहित समीक्षा कीजिए।

प्रश्न 15. 'अहिंसा, करुणा, मैत्री और विनय' नामक गुणों को भारतीय संस्कृति के मुख्य अंगों में स्थान देने का क्या कारण है? 'भारतीय संस्कृति' अध्याय के आधार पर समीक्षा कीजिए। (उत्तर सीमा 60 शब्द) 3

अथवा

''तुलसी का काव्य और लोक–संस्कृति, दोनों अभिन्न हैं।'' इस कथन की व्याख्या 'भक्ति आंदोलन और तुलसीदास' अध्याय के आधार पर कीजिए।

प्रश्न 16. ''कौन निःस्वार्थ किसी के साथ सलूक करता है। 'गुल्ली डंडा' कहानी के कथा नायक ने ऐसा किस घटना के संदर्भ में कहा? साथ ही इस कथन पर अपने मौलिक विचार संक्षेप में लिखिए। (उत्तर सीमा 60 शब्द) 1+2=3

प्रश्न 17. मंदोदरी का चरित्र–चित्रण कीजिए। (उत्तर सीमा 60 शब्द) 3

प्रश्न 18. यहु ऐसा संसार है, जैसा सेवल फूल।
दिन दस के त्यौहार कौं, झूठे रंग न भूलि।
कबीर दास जी के इस दोहे का काव्य सौंदर्य लिखिए।
(उत्तर सीमा 60 शब्द) $1\frac{1}{2}+1\frac{1}{2}=3$

प्रश्न 19. कवि घनानंद अथवा लेखिका महादेवी वर्मा के व्यक्तित्व व कृतित्व पद टिप्पणी लिखिए। (उत्तर सीमा 40 शब्द) 2

प्रश्न 20. कहानी 'सेव और देव' में लेखक के द्वारा फाहियान के जमाने का आदर्श किसे और क्यों कहा है? (उत्तर सीमा 40 शब्द) 2

प्रश्न 21. 'रावण अशुद्ध होकर भी यदि कर सकता
त्रस्त तो निश्चय तुम हो सिद्ध करोगे उसे ध्वस्त'
इन पंक्तियों में राम व रावण की कौन सी असमानता व्यंजित होती है? समझाइए।
(उत्तर सीमा 40 शब्द) 2

खण्ड – 4

प्रश्न 22. 'निज प्रेम पर स्वदेश प्रेम की महत्ता है।'
'भोर का तारा' एकांकी के आधार पर उपर्युक्त कथन की व्याख्या कीजिए।
(शब्द सीमा 80) 4

अथवा

किसी भी राष्ट्र को सम्पूर्ण रुप से समझने के लिए किन आधारभूत तत्त्वों का होना आवश्यक है?

प्रश्न 23. ''वर्तमान युग में वृद्ध दम्पत्तियों को एकाकीपन का दंश झेलना पड़ रहा है।'' इस कथन की पाठ के अनुसार व्याख्या कीजिए। (उत्तर सीमा 60 शब्द) 3

प्रश्न 24.''अपने निःस्वार्थ कार्यों से किसी के भी व्यक्तित्व में परिवर्तन लाया जा सकता है।'' इस कथन की व्याख्या 'सुभाषचन्द्र बोस' संकलित के आधार पर कीजिए।
(उत्तर सीमा 60 शब्द) 3

प्रश्न 25. ''गेहूँ बनाम गुलाब'' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि लेखक ने दूषित मानसिकता वालों को क्या संज्ञा दी है और क्यों? (उत्तर सीमा 60 शब्द) 3

प्रश्न 26. आर्य जाति की उच्च कोटि की मानसिकता ने भारत को विश्व में 'धर्मगुरु' के रुप में प्रतिष्ठित किया।'' हमारी पृष्ठभूमि व इसका गौरवमय अतीत' पाठ के आधार पर समझाइए।
(उत्तर सीमा 60 शब्द) 3

उत्तर तालिका – हिन्दी

प्रश्न संख्या	अपेक्षित उत्तर	खंडवार अंक	अंक	पाठ्य पुस्तक की संख्या
1.	पुनर्जागरण की भावना से प्रेरित, मातृभूमि प्रेम, स्वदेशी वस्तुओं से प्रेम, गौ–रक्षा, बाल विवाह निषेध आदि जन जागरण विषयों का समावेश। ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज, आर्य समाज आदि का प्रभाव। जन कल्याण हेतु साहित्य सृजन आर्थिक, सामाजिक व धार्मिक सुधार सम्बन्धी साहित्य।	2+2	4	हिंदी साहित्य का इतिहास पृ.सं.–98,101
2.	द्वन्द्वात्मकता, राष्ट्र प्रेम, नारी सममान, तत्सम शब्दावली का प्रयोग, ऐतिहासिक, धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक चेतना एवं यथार्थ परक नाटक। प्रमुख– अजातशत्रु, स्कन्दगुप्त, चन्द्रगुप्त आदि।	3+1	4	हिंदी साहित्य का इतिहास पृ.सं.–114, 115
3.	रेखाचित्र– शब्दों के माध्यम से किसी स्मृति का जीवित समान चित्र प्रस्तुतीकरण। संस्मरण– किसी भी भूतकाल की स्मृति में बसी किसी विशेष घटना का प्रस्तुतीकरण। अन्तर– दोनों में अन्तर को स्पष्ट करना।	1½+1½ +1	4	हिंदी साहित्य का इतिहास पृ.सं.–136, 139
4.	1. हिन्दी गद्य को परिष्कृत करने का कार्य 2. 1903–20 तक 'सरस्वती पत्रिका' के प्रकाशन का कार्य 3. प्रमुख रचनाएं 4. मौलिक पद व अनुवाद 5. कवि, आलोचक, निबन्धकार व साहित्यकार के रुप में कार्य	–	4	हिंदी साहित्य का इतिहास पृ.सं.–104, 105
5.	रचना पढ़कर पाठक का चित्त आनन्द से द्रवित हो जाए।	–	1	रस छंद अलंकार पृ.सं.–5
6.	जो शब्द कठोर अक्षरों से बने हो व सुनने में अच्छे लगे	–	1	रस छंद अलंकार पृ.सं.–5
7.	रोला व दोहा से निर्मित मिश्रित छंद पहली दो पंक्तियों में दोहा व अन्तिम चार में रोला। उचित उदाहरण स्वीकार्य।	2+1	3	रस छंद अलंकार पृ.सं.–53
8.	गीतिका– परिभाषा, सम–मात्रिक छंद, 26 मात्राएं, यति 14 व 12 पर हरिगीतिका– परिभाषा, सम–मात्रिक, चार चरण, प्रत्येक में 28 मात्राएं, यति 16 व 12 पर अन्तर– चरणों में, मात्राओं में यति पर	2+1	3	छंद अलंकार प्रवेशिका पृ.सं.–46, 47
9.	परिभाषा– प्रतीप का अर्थ उल्टा होता है। यह उपमा के विपरीत होता है। उचित उदाहरण स्वीकार्य अन्तर– (i) प्रतीप में उपमा के अंगों में उलटफेर होता है। व्यतिरेक में उपमेय का उत्कर्ष या उपमान का अपकर्ष दिखाया जाता है। (ii) व्यतिरेक में विशेषताओं या अवगुणों का महत्व रहता है। प्रतीप में ऐसा नहीं होता।	2+1+1	4	अलंकार परिचय पृ.सं.–68
10.	अन्योक्ति– अन्य की उक्ति अर्थात् उपमान की उक्ति या कथन कर के उपमेय का निरुपण किया जाये। विशेषताएं– (i) अप्रस्तुत से प्रस्तुत का अर्थ निकले (ii) चमत्कार के साथ अर्थ (iii) रोचक	+2+2	4	साहित्यशास्त्र परिचय पृ.सं.–72
11.	सप्रसंग व्याख्या पुस्तक – सरयू लेखक – बाबू गुलाबराय अध्याय– भारतीय संस्कृति उचित भाव व व्याकरण सम्मत भाषा युक्त व्याख्या स्वीकार्य	1+2	3	साहित्यशास्त्र परिचय पृ.सं.–78

उत्तर तालिका – हिन्दी

	अथवा पुस्तक – सरयू लेखक – श्रीधर पराड़कर अध्याय– भारत भी महाशक्ति बन सकता है। उचित भाव व व्याकरण सम्मत भाषा स्वीकार्य है।	1+2	3	साहित्यशास्त्र परिचय पृ.सं.–134
12.	सप्रसंग व्याख्या अध्याय– सेनापति कवि– सेनापति बसंत ऋतु वर्णन से युक्त उचित भाषा व व्याकरण सम्मत भाषा युक्त व्याख्या स्वीकार्य अथवा पुस्तक – सरयू कवि – रामधारी सिंह दिनकर अध्याय– कुरुक्षेत्र उचित भाव व व्याकरण सम्मत भाषा युक्त उचित व्याख्या स्वीकार्य	1+2	3	साहित्यशास्त्र परिचय पृ.सं.–19 पृ.सं.–42
13.	शिरीष के फूल अत्यंत मजबूती से अपने वृन्त से जुड़े रहते है, जब तक नए फूल–पत्ते उन्हें धक्का देकर ना गिरा दे। इसी प्रकार सत्ता प्राप्त व्यक्ति तब तक अपना पद नहीं छोड़ता, जब तक नई पौध उन्हें न हटा दे, इसी भाव वाले उत्तर स्वीकार्य है। अथवा लेखक श्रीधर पराड़कर को अत्यंत दुःख होता है कि भारतवासी अपने गौरवमयी अतीत को भुला बैठे है। भारतवासियों में आत्मविश्वास व गौरव को पुनः उत्पन्न करना होगा। भारत की श्रेष्ठता से विकसित देश भी भयभीत है। यह सभी को समझना होगा। इसके साथ मौलिक चिंतन वाले उत्तर स्वीकार्य।		4	सरयू पृ.सं.–83 सरयू पृ.सं.–132 से 135
14.	मानसिक उदारता, सांस्कृतिक विशालता और धार्मिक सहिष्णुता, मानवीयता, स्वाभिमान, उत्तम संगति, प्रकृति, दुष्ट प्रवृत्ति इत्यादि भाव से रहीम की रचनाएँ सरोबार है। इसी भाव वाले उदाहरण सहित उत्तर स्वीकार्य है। अथवा स्वतंत्रता पूर्व के दारिद्रयुक्त भारतीय ग्रामीण जीवन का यथार्थ चित्रण किया गया है। इसी भाव वाले उत्तर स्वीकार्य		4	सरयू पृ.सं.–10 से 13 सरयू पृ.सं.–47, 48
15.	अहिंसा, करुणा, मैत्रीऔर विनय किसी भी संस्कृति को उद्धत बनाते है, सभ्य बनाते है। अतः भारतीय संस्कृति में इन गुणों को प्रमुख स्थान दिया गया है। इसी भाव वाले उत्तर स्वीकार्य (भारतीय संस्कृति– बाबू गुलाबराय) अथवा लोक संस्कृति का सुन्दर चित्रण हिन्दी भाषी जनता को संगठित करने, उनमें जातीय एकता की भावना भरने में तुलसी काव्य का अद्‌भुत योगदान है। इसी भाव वाले उत्तर स्वीकार्य (भक्ति आन्दोलन और तुलसीदास)	–	3	सरयू पृ.सं.–78 सरयू पृ.सं.–120 से 125
16.	कथानायक ने अपने साथी गना को 5 पैसे के अमरुद इसी स्वार्थ के वशीभूत होकर खिलाए कि वह कथानायक से अपना दाँव नहीं माँगे। समाज में भी अधिकांशतः अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए इस प्रकार का व्यवहार देखने को मिलता है। इसी भाव वाले उत्तर स्वीकार्य (गुल्ली डंडा– प्रेमचंद)	2+1	3	सरयू पृ.सं.–61
17.	साम्राज्ञी, अप्रतिम सुन्दरी, नीतिज्ञ, बहुश्रुता, दूरदर्शी, विवेकशील, वेद–विधा विदुषी, क्रांतिकारी, पवित्रता भक्ति की प्रखर चेतना भाव से युक्त पति को	–	3	सरयू पृ.सं.–9

उत्तर तालिका – हिन्दी

	सन्मार्ग दिखाने वाली इत्यादि गुणों के चित्रण से युक्त भाव वाले उत्तर स्वीकार्य (मंदोदरी की रावण को सीख– गो. तुलसीदास)			
18.	भाव सौंदर्य– संसार को सेंवल के फूल की तरह बाहरी रुप से आकर्षक बताया गया है। परन्तु अंततः धोखा सिद्ध होता है। ईश्वर आराधना का संदेश दिया गया है। शिल्प सौंदर्य– यह ऐसा ..... सेवल का फूल में उपमा अलंकार दिना–दस–अनुप्रास अलंकार शैली आलंकारिकता, उपदेशात्मक भाषा– सघुक्कड़ी (दोहे– कबीरदास)	$1\frac{1}{2}+1\frac{1}{2}$	3	सरयू पृ.सं.–2
19.	घनानन्द– रीति मुक्त, स्वच्छन्द कवि, निम्बार्क सम्प्रदाय में दीक्षित, वियोग श्रृंगार प्रधान काव्य रचनाएँ ब्रजभाषा इत्यादि। अथवा महादेवी वर्मा– छायावादी प्रवर्तक प्रमुख कवयित्री, संस्मरणात्मक, रेखाचित्र लेखन के लिए प्रसिद्ध, नारी समस्याओं पर विशेष लेखन, प्रमुख रचनाऐं– नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्य गीत, अतीत के चलचित्र।	–	2	सरयू पृ.सं.–14 सरयू पृ.सं.–102
20	पहाड़ी व्यक्तियों को नैतिकतायुक्त, सादगी भरा सरल भोले जीवन को कहा है। फाह्यिान के भारत आगमन के समय जैसा सरल भारतीय समाज था, पहाड़ी जीवन आज भी वैसा ही है। सभी बुराइयों से परे। इसी भाव वाले उत्तर स्वीकार्य है। (सेव और देव– अज्ञेय)	–	2	सरयू पृ.सं.–111 से 119
21.	रावण का दुराचरणयुक्त व राम का सदाचारी व नैतिक शक्ति से युक्त होना। इसी भाव वाले उत्तर स्वीकार्य है। (राम की शक्ति पूजा– 'निराला')	–	2	सरयू पृ.सं.–30
22.	ऐतिहासिक एकांकी नायक शेखर अपनी प्रेयसी व पत्नी से प्रभावित होकर प्रेम की कृति 'भोर का तारा' लिखता हैं, लेकिन देश के संकट के समय उसे जलाकर देशप्रेम में ओज से परिपूर्ण गीतों का सृजन करता है तथा सिद्ध करता है कि कवि कर्म केवल आश्रयदाता की प्रशंसा ही नहीं अपितु राष्ट्र सेवा भी है। अथवा राष्ट्र के स्वरुप हेतु तीन तत्व प्रधान है। भूमि–माता की संज्ञा, जन–पुत्र की संज्ञा, संस्कृति जन सके माध्यम से पुरातन धरोहर व सभ्यता का संकलन, जो कि राष्ट्र रुपी वट का पुष्प है।	–	4	भोर का तारा पृ.सं.–79 से 81 राष्ट्र का स्वरुप पृ.सं.–9 से 14
23.	वानप्रस्थ जीवन में पुत्रों द्वारा न केवल आजादी विहीन जीवन अपितु दम्पत्ति को अलग–अलग दोनों बेटों के पास बाँट देना सर्वाधिक तकलीफ देय है। जो एकाकीपन तो झेलते हैं, साथ–साथ अपनी आजादी भी खो देते है। जो बच्चों के स्वार्थ का दंश है।	–	3	निर्वासित– सूर्यबाला पृ.सं.–15 से 24
24.	सुभाष महामारी में अपने मित्रों के साथ गाँव में गन्दी बस्ती साफ करते है। कुछ लोग विरोध करते है। इनमें हैदर नाम का गुण्डा भी है, लेकिन जब उसका परिवार चपेट में आता है तो सभी उसकी सहायता को मना कर देते है, लेकिन सुभाष व उनका दल हैदर के घर की सफाई व दवा आदि करते है। इस पर हैदर का ह्रदय परिवर्तन हो जाता है।	–	3	सुभाषचन्द्र बोस पृ.सं.–82 से 87
25.	बुरी मानसिकता वालों को राक्षस का नाम दिया है। जो दूसरों की बहन–बेटी पर बुरी नजर रखते है, शोषण करते हैं। जिनकी लालसा समाप्त नहीं होती। अवांछित वस्तुओं का प्रयोग करते हैं।	1+2	3	गेहूँ बनाम गुलाब पृ.सं. – 82 से 87
26.	आर्य जाति का इतिहास गौरवमयी रहा है। विश्व को रेखा गणित, ज्योतिष, रसायन व संगीत दिया। मानसिक शांति प्राप्ति हेतु वैराग्य मार्ग दिया। भारतीय दर्शन दिया, बौद्ध धर्म दिया, वेद व धर्म की सही परिभाषा दी।	–	3	हमारी पुण्यभूमि व गौरवमय अतीत पृ.सं. – 25 से 32